SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 20 • ISSUE 12 • FEBRUARY 2022

हिन्दी मासिक

फरवरी 2022

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

ख़ुश मौसम लेकर आई फरवरी
दिन अच्छी लेकर आई फरवरी
जाड़े की ठिठुरन दूर हुई
दिन काम के लेकर आई फरवरी

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

फरवरी, 2022 वर्ष 20 अंक 12

बीस वर्ष पूरे कर लिये

सच्चा राही चलते चलते
वर्ष बीस कर लिये हैं पक्के
सत्य मार्ग पर चलते रहना
इसका है उद्देश्य यह अपना
दीन की है यह ख़िदमत करता
हर क़ारी इसका है कहता
पाठक इसके ख़ुद हैं पढ़ते
औरों से इस को पढ़वाते
सच्चा राही जो भी पढ़ता
पसन्द इसे वह दिल से करता
ग्राहक इसका ख़ुशी से बनता
लेख भी इसके लिए है लिखता
दीन का ख़ादिम सच्चा राही
दीन का सच्चा है यह सिपाही

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
कुरआन शरीफ़ का सबसे पहला	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
सभ्यता और संस्कृति पर इस्लाम	हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
नाज़िम नदवतुल उलाम	इदारा	14
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	16
कर सकते थे जो अपने ज़माने की	डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	19
जीवन का एक सुनहरा साल गया	जमाल अहमद नदवी	22
नींद क्यों रात भर नहीं आती	डॉ0 हाफिज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	25
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	27
हिन्दुस्तानी मुसलमान	इदारा	31
कोशिश किये जाओ	मौलवी इस्माईल मेरठी	33
आह! प्यारे दादा जान	अब्दुलकरीम सिद्दीक़ी नदवी	34
ऐकता का संदेष्टा	अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	38
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद—

उनसे जंग करो ताकि अल्लाह तुम्हारे हाथों से उनको अज़ाब (यात्ना) दे और उनको अपमानित और उन पर तुम्हारी मदद करे और उन लोगों के कलेजे ठंडे करे जो ईमान रखते हैं(14) और उनके दिलों की कुढ़न को दूर कर दे और अल्लाह जिसकी चाहता है तौबा स्वीकार करता है और अल्लाह ख़ूब जानता हिक़्मत (युक्ति) रखता है[1](15) क्या तुम समझते हो कि तुम्हें यूँ ही छोड़ दिया जायेगा जब कि अल्लाह को ख़बर है[2](16) मुश्रिक लोग इस लायक़ नहीं की वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें जब कि वे खुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं, ऐसे लोगों के सब काम बर्बाद हो गये और वे हमेशा आग ही में रहेंगे(17) अल्लाह की मस्जिदों को वे लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएं और उन्होंने नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे तो ऐसे ही लोगों के बारे में आशा है कि वे सही रास्ते पर होंगे(18) क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम को आबाद करने को उस व्यक्ति के बराबर कर दिया है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और उसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, अल्लाह के यहां वे बराबर नहीं हो सकते और अल्लाह अन्याय करने वालों को हिदायत नहीं देता[3](19) जो ईमान लाये और उन्होंने हिज़रत की और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और जानों से जेहाद किया वे अल्लाह के यहाँ सबसे ऊँचा दर्जा रखते हैं और वही लोग सफल हैं(20)। उनका पालनहार अपने पास से दया और प्रसन्नता का उनको शुभसमाचार सुनाता है और ऐसी जन्नतों का जिसमें उनके लिए हमेशा की नेमतें हैं(21) उसी में वे हमेशा रहेंगे निःसंदेह अल्लाह के पास तो बड़ा बदला है[4](22) ऐ ईमान वालो! तुम अपने बाप और भाईयों को अगर वे ईमान के मुकाबले कुफ़्र को पसंद करें संरक्षक मत बनाओ और तुम में जो भी उनसे दोस्ती करेगा तो वही लोग अन्याय करने वाले हैं(23) आप कह दीजिए कि तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारा परिवार और वह माल जो तुमने कमा रखा है और वह कारोबार जिसके ठप हो जाने का तुम्हें डर हो और वह मकान जो तुम्हें पसंद हो अगर तुम्हें अल्लाह और उसके पैग़म्बर से और उसके रास्ते में जेहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो प्रतीक्षा करो यहां तक कि अल्लाह अपना आदेश भेज दे

और अल्लाह अवज्ञाकारियों को सत्यमार्ग नहीं देता[2](24) बेशक अल्लाह ने बहुत से अवसरों पर तुम्हारी मदद की और हुनैन के दिन भी जब तुम्हें अपनी अधिकता पर गर्व हुआ तो वह कुछ भी तुम्हारे काम न आई और धरती अपनी व्यापकता के बावजूद तुम पर तंग (संकुचित) हो गई फिर तुम पीठ फेर कर भागे[6](25) फिर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर और ईमान वालों पर ऐसी सकीनत और ऐसी सेनाएं उतारीं जो दिखाई न दीं और इनकार करने वालों को अज़ाब दिया और यही इनकार करने वालों की सज़ा है(26)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. पिछली क़ौमों ने अवज्ञा (नाफ़रमानी) की, वे सब बर्बाद कर दिये गये, इस उम्मत (समुदाय) में अवज्ञाकारों को अल्लाह ने आम अज़ाब में गिरिफ़्तार नहीं किया बल्कि ईमान वालों को उनसे जेहाद का आदेश हुआ ताकि ईमान वालों को तसल्ली हो और नाफ़रमानों को भी तौबा करने का अवसर रहे।

2. जेहाद का एक उद्देश्य यह भी है कि दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है।

3. मुश्रिकों को हाजियों की सेवा पर बड़ा गर्व था कुछ मुसलमानों में भी इस संबंध में वार्ता हुई तो किसी ने कहा कि इस्लाम के बाद सबसे बड़ा हाजियों की सेवा है इस पर यह आयतें उतरीं जिसमें बता दिया गया कि ईमान के बिना यह सब काम बर्बाद और तत्थ्यहीन हैं जो ईमान लाया और जेहाद किया वह उच्च कोटि का है।

4. पहली आयत में तीन चीज़ों का उल्लेख था, ईमान, हिजरत और जेहाद, इस पर तीन चीज़ों की खुशख़बरी दी जा रही है, रहमत (दया), रिज़वान (प्रसन्नता) हमेशा के लिए जन्नत में रहना, आगे आयत में कहा जा रहा है कि यह नेमतें ईमान और अल्लाह के रास्ते में जेहाद से मिलती हैं तो तुम्हारे रिश्ते नाते इसमें रुकावट न बनें, कैसी ही करीबी नातेदारी हो अगर ईमान नहीं तो ऐसों से दोस्ती भी नहीं होनी चाहिए।

5. यानी अल्लाह और उसके रसूल की बात मानने और जेहाद करने से अधिक तुम्हें दुन्या में यह साधन पसंद हैं तो खुदा के अज़ाब की प्रतीक्षा करो जो इस संसार के लोभ व आराम तलबी पर आने वाला है और वह अपमान और तृस्कार के रूप में है।

6. जेहाद के समय जिस तरह अपने धन व संतान पर नज़र नहीं होनी चाहिए इसी प्रकार अपनी अधिकता पर गर्व नहीं होना चाहिए, मदद केवल अल्लाह की ओर से है जिसका अनुभव तुम बद्र, कुरैज़ा क़बीले से युद्ध और न जाने कितने अवसरों पर कर चुके हो, हुनैन की घटना यह हुई कि मक्का विजय के बाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि कबीला हवाज़िन व सक़ीफ़ बड़ा जत्था एकत्र करके मुसलमानों पर हमला करना चाहते हैं, यह समाचार मिलते ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बारह हज़ार की सशस्त्र सेना के साथ (जिनमें दो हज़ार

शेष पृष्ठ...13...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

अल्लाह की याद, उसी से मांगना, उसी से मदद तलब करनाः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि एक दिन मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 के पीछे था आप सल्ल0 ने फरमाया लड़के! मैं तुम को कुछ अल्फाज़ बताता हूँ, तुम अल्लाह के हुकमों को पूरे तौर पर मानो, वह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा, अल्लाह को याद रखो, उसको अपने सामने पाओगे। जब सवाल करना तो अल्लाह ही से करना, जब मदद चाहना तो अल्लाह ही से चाहना, जान लो अगर सारी दुन्या इस बात पर इत्तिफाक़ कर ले कि तुझको नफा पहुँचाये तो तुझको कुछ नफा नहीं पहुँचा सकती, मगर वही जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है, और अगर सारी दुन्या इस बात पर इत्तिफाक़ कर ले कि तुझको नुक़सान पहुँचाये तो नुक़सान नहीं पहुँचा सकती मगर वही जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है, क़लम उठा लिये गये, और सहीफे खुश्क कर दिये गये।

(तिर्मिजी)

ज़रूरतें पूरा करने वाला केवल अल्लाह को समझना चाहिएः—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है तुममें से हर व्यक्ति को अपनी तमाम ज़रूरतें अल्लाह तआ़ला से माँगना चाहिए, यहाँ तक कि जब उसके जूते का तस्मा (फीता) टूट जाये वह भी अल्लाह तआ़ला ही से माँगे।

(तिर्मिजी)

दूसरी क़ौमों का शिआ़र (तौर तरीक़ा) नहीं अपनाना चाहिएः—

हज़रत अ़दी बिन हातिम रज़ि0 से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाजिर हुआ और मेरी गर्दन में सोने का सलीब पड़ा हुआ था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अ़दी! इस बुत को अपनी गर्दन से निकाल फेंको, मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूरतुल बराअ़ः की यह आयत पढ़ते हुए सुना, अनुवादः ''उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर आलिमों और राहिबों को खुदा बना लिया[1]'', फिर इरशाद फरमाया वह उनकी इबादत नहीं करते थे, लेकिन जब वह किसी चीज़ को हलाल कर देते तो यह लोग हलाल समझने लगते और जब किसी चीज़ को उन पर हराम कर देते तो यह उसको हराम समझते।

(तिर्मिज़ी)

1. अर्थात अल्लाह और उसके रसूल की बताई हुई चीज़ को कोई हराम नहीं कर सकता, और हराम बताई हुई चीज़ को कोई हलाल नहीं कह सकता, न कोई आमिल और न कोई बुज़ुर्ग, और जो ऐसा करने वाले

की बात मान ले और उसके लिए हराम व हलाल करने की इजाज़त समझे, वह तो इस वईद (दण्ड) में शामिल हो जायेगा।

अल्लाह के अलावा दूसरों के सामने सज्दा करने की मनाहीः—

हज़रत क़ैस बिन सअद बिन उबादा खज़रजी अंसारी रज़ि0 से रिवायत है, फरमाया मैं ''हीरा'' गया, तो वहां के लोगों को देखा कि वह अपने सरदार को सज्दा करते हैं, मैंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो जियादा हक़दार हैं कि आपको सज्दा किया जाये, उसके बाद मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में हाजिर हुआ और अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल मैं ''हीरा'' गया था तो मैंने वहां देखा कि वह लोग अपने सरदार को सज्दा करते हैं, आप तो कहीं ज़ियादा हक़दार हैं कि हम आपको सज्दा करें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम लोग ऐसा न करो।

(अबू दाऊद)

अल्लाह की ज़ात सिफारिश से बलन्द व बाला हैः—

हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक देहाती आया और उसने कहा, हुजूर! लोग परेशान हैं, बाल बच्चे भूखे हैं, माल खत्म हो गया, जानवर मर गये, आप अल्लाह से हमारे लिए बारिश की दुआ फरमाइये हम आपसे अल्लाह के दरबार में सिफारिश की दरख़्वास्त करते हैं, और अल्लाह से आपके दरबार में सिफारिश चाहते हैं, यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्ल0 अल्लाह की पाकी व बुजुर्गी बयान करने लगे, और बराबर सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह फरमाते रहे, यहाँ तक कि उसका असर सहाब—ए—किराम रज़ि0 के चेहरों पर जाहिर होने लगा, फिर आपने फरमाया, तुम्हारा बुरा हो, तुमको समझना चाहिए अल्लाह की मख़्लूक़ में से किसी के लिए अल्लाह तआ़ला से सिफारिश नहीं चाही जा सकती है, अल्लाह की शान उससे बहुत बलन्द व बाला है।

(अबू दाऊद)

नबी भी आलिमुल गैब नहीं हैंः—

हज़रत रबीअ़ बिन्त मुअव्विज बिन अफरा रज़ि0 से रिवायत है कि फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और सुहाग रात में इस तरह मेरे बिस्तर पर बैठे जैसे आप बैठे हुए हैं[1], इतने में हमारी कुछ बच्चियाँ दफ (डफली) बजाने लगीं, और हमारे पूर्वजों में जो काम आये थे उनके शोक में लिखे गये गीत गाने लगीं इतने में एक लड़की ने कहा और हम में एक ऐसे नबी हैं जो कल की बात जानते हैं[2], आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह छोड़ दो (मत कहो) वह कहो जो तुम कह रही थीं।

(बुखारी)

अर्थात—

1). यह पर्दे का हुक्म नाज़िल होने से पहले का वाक़िया है।

2). ग़ैब जानने की निस्बत सुन कर रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फौरन इस्लाह कर दी ताकि आगे चल कर अकीदा न बिगड़ने पाये।

◆◇◆

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

सम्पादकीय

कुरआन शरीफ़ का सबसे पहला सबक़

सूरः अल–फ़ातिहा

–मुहम्मद गुफ़रान नदवी

कुरआन शरीफ़ एक सौ चौदह सूरतों पर विभाजित है सबसे पहली सूरः अल–फ़ातिहा, सबसे अन्तिम सूरः अन–नास। यह पूरा कुर्आन अर्शे इलाही से आवश्यकतानुसार अल्लाह के मुक़द्दस फ़रिश्ते हज़रत जिबरईल अमीन, द्वारा 23 वर्षों में अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुआ। कुरआन की यह पहली सूरः अल–फ़ातिहा बहुत महत्वपूर्ण और बड़ी विशेषताओं वाली सूरः है यह सूरः सात आयतों पर आधारित है, यह सातों आयतें अर्शे इलाही से एक साथ नाज़िल हुईं, सूरः फ़ातिहा पूरे कुरआन का सार है, नमाज़ जैसी इबादत की हर रकअ़त में इसका पढ़ना अनिवार्य है, हर बड़ी किताब में एक भूमिका होती है जिस को पढ़ कर पूर्ण किताब का परिचय हो जाता है, बिलकुल यही हैसियत सूरः फ़ातिहा की है आप इस सूरः को दिन और रात के 24 घण्टे की पाँचों नमाज़ों में पढ़ते हैं, यदि इसका अनुवाद भी आपके सामने हो तो बहुत अच्छी बात है, इस प्रकार नमाज़ पढ़ने में आप का दिल लगेगा, ध्यान पूर्वक इसका अनुवाद पढ़येः–

''अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान और रहम करने वाला है। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहान का रब है। बड़ा ही मेहरबान और दया करने वाला है। बदला दिये जाने के दिन का मालिक है। हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं। हमें सीधा मार्ग दिखा। उन लागों का मार्ग जो तेरी कृपा के पात्र हुए। जो प्रकोप के भागी नहीं हुए, जो भटके हुए नहीं हैं।''

इस अनुवाद के बाद आवश्यक व्याख्या भी सुन लीजिये ताकि उसकी महत्ता और उपयोगिता स्पष्ट हो जाये, जैसा कि बताया गया कि सूरः फ़ातिहा सात आयतों पर आधारित है, पहली तीन आयतों में दुआ और प्रार्थना का विषय है जो अल्लाह ने अपनी ओर से स्वयं इनसान को सिखाया यह उसकी रहमत और दया है और बीच की एक आयत में दोनों चीज़ें संयुक्त हैं, कुछ प्रशंसा और तरीफ़ का भाग है, और कुछ प्रार्थना, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हक़ तआला ने फ़रमाया है कि सूरः फ़ातिहा मेरे और मेरे बन्दे के बीच दो भागों में विभाजित की गई है, आधा मेरे लिए है और आधा मेरे बन्दे के लिए, और जो कुछ मेरा बन्दा मांगता है वह उसको दिया जायेगा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बन्दा जब कहता है ''अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन'' तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने मेरी हम्द की है और जब वह

कहता है ''अर्रहमानिर्रहीम'' तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने मेरी तारीफ़ व सना बयान की है, और जब बन्दा कहता है ''मालिकि यौमिद्दीन'' तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने बुजुरगी बयान की है, और जब बन्दा कहता है ''इय्या का नअ़बुदू व इय्या का नसतईन'' तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह आयत मेरे और मेरे बन्दे के बीच सम्मिलित है क्योंकि इसमें एक भाग हक़ तआला की हम्द व सना का है और दूसरा भाग बन्दे की दुआ व दरख़्वास्त का, इसके साथ यह भी इरशाद हुआ कि ''मेरे बन्दे को वह चीज़ मिलेगी जो उसने माँगी'' फिर जब बन्दा कहता है ''इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम...'' तो हक़ तआला फ़रमाता है कि यह सब मेरे बन्दे के लिए है, और उसको वह चीज़ मिलेगी जो उसने माँगी।

कुरआन शरीफ़ के इस सर्व प्रथम पाठ में मनुष्य को निम्नलिखित बिन्दुओं की शिक्षा दी गई है:–

कि वह अपने वास्तविक स्वामी अल्लाह से कैसे दुआ माँगे और किन शब्दों में दुआ मांगे, और दुआ में ऐसी चीज़ें मांगी जायें, जिन पर दुन्या और आख़िरत की कामयाबी और सफलता का दारोमदार है। सबसे पहले अल्लाह की ज़ात और अस्तित्व, उसकी विशालता और प्रभुत्व का पूरा ज्ञान और बोध हो, जिसके क़बज़–ए–कुदरत में संसार का कण–कण है। इस बोध और ज्ञान के बाद बिना किसी संकोच के बन्दे की ज़बान पर यह शब्द आते हैं कि पूर्ण रूप से प्रशंसा अल्लाह के लिए है वही प्रशंसा योग्य है, दूसरा कोई नहीं, वह सारे संसार का पालनहार है इसके साथ साथ अपने बन्दों के लिए रहमान व रहीम अर्थात बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है। उन विशेषताओं के बाद जिन का वर्णन ऊपर हुआ है।

अल्लाह की बहुत बड़ी विशेषता यह है कि वही बदला दिये जाने के दिन का मालिक है, वह दिन क़यामत का दिन, मैदाने हश्र का दिन, जिस दिन सारे इन्सान अपने नाम–ए–आमाल के साथ अल्लाह के रूबरू पेश होंगे, उस नाम–ए–आमाल में इन्सान का छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा अमल मौजूद होगा, और उसको पूरा पूरा बदला दिया जायेगा, अल्लाह की इन विशेषताओं को स्वीकार करने के बाद इनसान स्वयं कहता है और यह उसके अन्दर की आवाज़ होती है कि ऐ! अल्लाह हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं तेरी इबादत और तेरी मदद में किसी दूसरे को शरीक नहीं करते किसी और को साझीदार नहीं बनाते। इस महत्वपूर्ण और व्यापक दुआ की समाप्ति पर अन्तिम तीन आयतें ''हमें सीधे मार्ग पर चला, उन लोगों के मार्ग पर जो तेरे कृपा पात्र हुए, जो न प्रकोप के भागी हुए और न पथ भ्रष्ट। सूरः फ़ातिहा का निचोड़ और सार है, सीधा मार्ग, सीधा रास्ता वह है जिसमें मोड़ न हो, जिस का अभिप्राय दीन का वह सीधा रास्ता, जो कमीबेशी से ख़ाली हो, और सटीक हो, इसके बाद सीधे रास्ते का पता दिया गया

है, वह सीधा रास्ता, नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सुवालिहीन (नेक लोगों) का है, इन्सानों का यही वर्ग है जिनको अल्लाह की ओर से पुरुष्कृत किया गया है, अल्लाह के इन सर्वप्रिय बन्दों के चार ग्रूप हैं, जिनमें उच्चतर अंबिया अलैहिमुस्सलाम हैं और सिद्दीक़ीन वह लोग हैं जो अंबिया की उम्मत में सबसे ज़ियादा रुतबे के होते हैं। जिनमें कमालाते बातिनी (आध्यात्मिक योग्यता) होते हैं जिनका उपनाम औलिया है, शहीद वह हैं जिन्होंने दीन की महब्बत में अपनी जान तक दे दी। ''सुलहा' वह हैं जो शरीअत के पूर्ण रूप से अनुयायी हैं जिनको सामान्यतः नेक दीनदार कहा जाता है। इसकी पुष्टि और समर्थन सूरः निसा आयत नं0 69 से होती है। ''इहदिनस सिरातल मुस्तक़ीम'' इस आयत में पहले मुसबत सकारात्मक तरीक़े से ''सिराते मुस्तक़ीम'' सीधे रास्ते को निश्चित किया गया है कि इन चार वर्गों के हज़रात जिस रास्ते पर चले वह ''सिराते मुस्तक़ीम'' सीधा रास्ता है, इसके बाद सूरः फ़ातिहा की अन्तिम आयत में नकारात्मक रूप में इसको निश्चित किया गया है।

''ग़ैरिलमग़ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन'' उन लोगों का रास्ता नहीं जिन पर अल्लाह का गज़ब (क्रोध) नाज़िल हुआ और उन लोगों का रास्ता, जो रास्ते से भटक गये। ''मग़ज़ूबि अलैहिम'' से वह लोग मुराद हैं जो दीन के आदेशों को जानने पहचानने के बावजूद शरारत या स्वार्थपरता के कारण विरोध करते हैं या दूसरे शब्दों में अल्लाह के आज्ञा पालन में कोताही करते हैं जैसे आमतौर पर यहूद का हाल था कि दुन्या के तुच्छ लाभ के लिए दीन को क़ुरबान करते और अंबिया का अपमान करते थे और ''ज़ुवाल्लीन'' पथभ्रष्ट से मुराद वह लोग हैं जो अनभिज्ञता और अज्ञानता के कारण दीन के विषय में ग़लत रास्ते पर पड़ गये थे और दीन की निर्धारित सीमा से निकल कर आगे बढ़ गये, और बहुत ज़ियादती की, जैसे ईसाई थे नबी के सम्मान में इतने बढ़े कि उन्हीं को ख़ुदा बना लिया। एक ओर यह हटधर्मी कि अल्लाह के नबियों की बात न मानें, उन्हें क़त्ल करने से घृणा न करें, और दूसरी यह ज़ियादती कि उनको ख़ुदा बना लें।

सूरः फ़ातिहा की सातों आयतों का ख़ुलासा और निचोड़ यह हुआ कि अल्लाह हमें ''सिराते मुस्तक़ीम'' सीधे रास्ते की हिदायत पथ प्रदर्शन प्रदान करे, चूंकि दुन्या में ''सिराते मुस्तक़ीम'' का पहचानना ही सबसे बड़ा इल्म और कामयाबी है और इसी की पहचान में ग़लती होने से दुन्या की क़ौमें तबाह होती हैं, वरना ख़ुदा तलबी और उसके लिए मुजाहिदात और मेहनतों की तो बहुत से कुफ़्फ़ार में भी कोई कमी नहीं, इसीलिए कुरआन ने ''सिराते मुस्तक़ीम'' को पूरी वज़ाहत के साथ सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं से स्पष्ट कर दिया। ◆◇◆

हम को मिटा सके यह ज़माने में दम नहीं
हम से ज़माना ख़ुद है ज़माने से हम नहीं
जिगर मुरादाबादी

सभ्यता और संस्कृति पर इस्लाम की छाप और उसकी देन

—हज़रत मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी (रह0)

—अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

इस्लाम का विश्वव्यापी प्रभावः—

यहाँ लेखक अपनी पुस्तक ''इनसानी दुन्या पर मुसलमानों के उत्थान व पतन का प्रभाव'' से एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है जिसमें उसने इस्लामी सभ्यता तथा मानव चिन्तन पर उसके प्रभावों का जायज़ा लिया हैः—

''जिस प्रकार बसन्त ऋतु में वनस्पति तथा मानव—मन ऋतु से प्रभावित होते हैं उसी प्रकार जाने—अनजाने ढंग से इस्लामी शासन व सभ्यता के युग में लोगों की मनः स्थिति तथा दृष्टिकोण परिवर्तित और इस्लाम से प्रभावित होने लगे। हृदयों में नम्रता और नर्मी पैदा होने लगी। इस्लाम के सिद्धान्त तथा उसकी वास्तविकतायें मन मस्तिष्क में समाने लगीं। चीजों की क़दर व क़ीमत के बारे में लोगों का दृष्टिकोण बदलने लगा। कल तक जिन वस्तुओं तथा जिन गुणों का लोगों की दृष्टि में बड़ा महत्व था अब वह जाता रहा, और जो वस्तुएं बेकार समझी जाती थीं उनका महत्व बढ़ गया। पुराने मापदण्डों का स्थान नये मापदण्डों ने ले लिया। अज्ञानता अकर्मण्यता का द्योतक बन गयी और उसके अनुयाइयों में हीनता की भावना उत्पन्न हो गयी। और इस्लाम से सम्बन्ध, उसकी विशेषताओं को अंगीकार करना गर्व व प्रशंसा का विषय बन गया। दुन्या इस्लाम से धीरे— धीरे करीब हो रही थी। जिस प्रकार पृथ्वी पर रहने वालों को सूर्य के चारों ओर परिक्रमा का आभास नहीं होता उसी प्रकार इन क़ौमों को तथा उनके व्यक्तियों को अपनी इस्लामी प्रवृति तथा इस्लाम के आन्तरिक प्रभावों का आभास नहीं होता था इन प्रभावों से न ज्ञान व दर्शन खाली था, न धर्म व सभ्यता। लोगों के अन्तःकरण इन प्रभावों की गवाही देते थे और उनकी सुधारात्मक प्रवृत्ति इसका प्रमाण प्रस्तुत करती थी। मुसलमानों के पतन के बाद भी जो सुधारात्मक आन्दोलन इन क़ौमों ने चलाये वह इस्लामी प्रभावों तथा इस्लामी विचारों के प्रतिफल हैं''।

दुन्या को इस्लाम की दस महत्वपूर्ण एवं आधारभूत भेंटः—

मानव सभ्यता पर इस्लाम की छाप का उल्लेख करते हुए यहां हम इस्लाम के प्रभावों को उसके द्वारा प्रदत्त दस आधारभूत भेंटों के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। इन दस बातों ने मानवता के पथ—प्रदर्शन, उसके उत्थान व कल्याण तथा उसके विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इन से एक सजीव संसार की रचना हुई है।

यह दस इस्लामी *(Gifts)* उपहार निम्नवत हैंः—

1. स्पष्ट एकेश्वरवाद (तौहीद)।
2. मानव एकता व समता की परिकल्पना।
3. मानव के सर्वोत्कृष्ट प्राणी

होने तथा उसे ऊँचा उठाने का एलान।

4. नारी की प्रतिष्ठा तथा उसके अधिकारों की बहाली।

5. निराशावादिता तथा असगुन की काट के साथ मानव मन में आत्मविश्वास व हौसलामन्दी तथा आत्मगौरव की भावना को बढ़ावा देना।

6. दीन व दुन्या (धर्म व संसार) का मेल और विरोधी व मोर्चाबन्दी के लिए तैयार मानव वर्गों की एकता।

7. धर्म व ज्ञान के बीच पवित्र एवं स्थायी सम्बन्धों की स्थापना व सुदृढ़ीकरण तथा एक के भाग्य को दूसरे के भाग्य से जोड़ देना। ज्ञान की गरिमा, उसे उपयोगी तथा ईश्वर–प्राप्ति का साधन बनाने का संकल्प प्रयास।

8. धार्मिक मामलों में भी बुद्धि से काम लेने और लाभ उठाने तथा सृष्टि पर सोच विचार करने की प्रेरणा।

9. इसलामी उम्मत को दुन्या की देख–रेख उसे पथ–प्रदर्शन, व्यक्तिगत व सामूहिक आचरण का लेखा–जोखा दुन्या में न्याय की स्थापना और सत्य के बोल–बाला की जिम्मेदारी स्वीकार करने पर आमादा व तैयार करना।

10. विश्वास व सभ्यता की विश्वव्यापी एकता की स्थापना।

इनमें से प्रत्येक शीर्षक अत्यन्त विस्तृत है। वह चाहता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय से पहले के आज्ञानता के युगों व सभ्यताओं तथा इस्लामी युग व सभ्यता व समाज़ के बीच न्यायपूर्ण व सत्यप्रिय तुलना की जाये। और इनमें से प्रत्येक विषय के लिए सैकड़ों पृष्ठों की स्थायी रचना की आवश्यकता है।

अब हम मानव–जीवन के उन पहलुओं व संकायों पर अलग–अलग विचार करेंगे जिनमें इस्लाम के सैद्धान्तिक व क्रान्तिकारी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं। और उससे इस्लाम की क्रान्तिकारी ताक़त उसकी व्यापकता तथा उसके आन्तरिक बल की अभिव्यक्ति होती है।

❖❖❖

कुरआन की शिक्षा.....

वह भी थे जो मक्का विजय के अवसर पर मुसलमान हुए थे) तायफ़ की ओर रवाना हुए, उस समय कुछ लागों की ज़बान से निकल गया कि आज हमें कौन हरा सकता है, यह बात अल्लाह को पसंद न आई, हवाज़िन का क़बीला तीरंदाज़ी में प्रसिद्ध था, उन्होंने इस ढंग से तीरंदाज़ी की कि मुसलमाना तितरबितर हो गये, केवल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ सहाबा के साथ मैदान–ए–जंग में रह गये, चारों ओर से दुश्मनों का हमला था, उस समय अल्लाह की विशेष मदद आई, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मुट्ठी मिट्टी उठा कर दुश्मनों की फ़ौज पर फेंकी वह सब की आँखों में पहुँची, लोग आँखें मलने लगे, इसी बीच में आपने आवाज़ दी, सहाबा ने पलट कर हमला किया और अल्लाह ने विजय प्रदान की।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

नाज़िम नदवतुल उलमा

मौलाना सै० मु० राबे हसनी नदवी से एक विशेष साक्षातकार

प्रश्न :– वर्तमान काल में देश का न्यायालय और शासन सभी का रवैया, मुस्लिम विरोधी लगती है, आप मुसलमानों को क्या नसीहतें और मशवरह देना चाहेंगे?

उत्तर :– आज जब की शासन और न्यायालय सब का व्यवहार मुस्लिम विरोधी लगता है, मुसलमानों की दो अहम ज़िम्मेदारियाँ हैं, एक तो यह कि वह स्वयं यथा संभव इस्लामी शिक्षा पर अमल करने की कोशिश करें और शरीअत के क़ानून को स्वयं अपनी ज़िन्दगी पर लागू करें और दूसरी ओर विशेषता के साथ मुस्लिम प्रसनल लॉ का उचित ढंग से दूसरों के सामने परिचय करायें ताकि भ्रांतियाँ दूर हों, इस मुस्लिम विरोधी रवैये के पीछे जहाँ कुछ चरमपंथियों का हाथ नज़र आता है वहीं इस रवैये में उग्रता पैदा होने में बहुत कुछ दख़ल हमारी कार्यप्रणाली का भी है, हमको भी अपनी कार्य पद्धति बदलनी होगी, हमको भी अपनी कमियाँ दूर करनी होंगी, अच्छे अख़लाक़ अच्छे किरदार, अच्छे व्यवहार से बड़े से बड़े दुशमन को दोस्त बनाया जा सकता है, आज जो हमारे ख़िलाफ़ खड़े हैं कल वही हमारे लिए खड़े हो सकते हैं, हमें इस पद्धति पर काम करना चाहिए और हमारे विरोध में जो राय बनाई जा रही है उस राय को अपने इस्लामी चरित्र से बदलना चाहिए।

प्रश्न :– देश में हर ओर नफ़रत और घृणा है, आर0एस0एस0, बी0जे0पी0 ने ऐसा माहौल बनाया और ऐसी लोगों की मनोवृत्ति बनाई कि देश के बहुसंख्यक मुसलमानों को अपना दुशमन मानने लगे हैं, इन हालात से मुसलमान कैसे निपटें?

उत्तर :– मुसलमानों की भी यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी तसवीर सही करें, इस्लाम के नैतिक और समाजी व्यवहार को अपने व्यवहारिक जीवन द्वारा प्रस्तुत करें, दूरियाँ कम होंगी और हालात इन्शाअल्लाह तआला बदलेंगे, कुछ लोग अवश्य इस देश में ऐसे हैं जो जान बूझ कर सत्ता की कुर्सी तक पहुँचने के लिए, मुसलमानों के विरोध में दुशमनी का माहौल बना रहे हैं, लेकिन बड़ी संख्या इस देश में ऐसे लोगों की है जो उनके प्रोपैगन्डे से प्रभावित हो कर गलत फ़हमी की बुनयाद पर उनको ग़लत समझने लगते हैं, हमें ऐसे लोगों की ग़लतफ़हमियों और दुर्भावनओं को दूर करने की ज़रूरत है, जो लोग जान बूझ कर ऐसा कर रहे हैं उनसे उलझने की ज़रूरत नहीं, हमें उन लोगों की ओर ध्यान देना चाहिए जो नासमझी की बुन्याद पर ऐसा कर रहे हैं, उनको समझाना और मुतमइन (सन्तुष्ट) करना आसान है। लेकिन यह उसी समय संभव है जब हमारी ज़िन्दगी हमारे ही ख़िलाफ़ गवाही न दे।

प्रश्न :– हिन्दुस्तान सेकुलर मुल्क है फिर भी आज तमाम पार्टियाँ अल्पसंख्यक विशेष रूप से मुसलमानों से नज़रें चुरा रही हैं,

हम सियासी तौर पर हाशिये पर आ गये हैं, मुसलमानों की अपनी कोई सियासी लीडरशिप नहीं, क्या आप मुसलमानों को कोई सियासी मशवरा देना पसन्द करेंगे?

उत्तर :– जो कुछ नज़र आ रहा है उसमें कुछ हमारी कोताहियाँ हैं, हम अपनी तस्वीर सही करें तो बहुत कुछ बदलाव की उम्मीद है, जो कुछ हो रहा है वह उन ग़लतफहमियों का नतीजा है जो देश में फैलाई गई हैं, उनका निवारण हमारी बड़ी ज़िम्मेदारी है, बी0जी0पी0 के सत्तारूढ़ होने के बाद कुछ इस तरह की सूरते हाल सामने आ रही है, इसमें कुछ दख़ल तो रूलिंग पार्टी की पॉलीसियों का है कि वह अपने मतदाताओं में यह भ्रम पैदा करना चाहते हैं कि सेकुलर पार्टियाँ मुस्लिम हितैषी हैं और उन्हीं के लिए काम करती हैं तो तुम उनको वोट क्यों देते हो? यह दुर्भावना इतनी फैलायी जा रही कि सेकुलर पार्टियाँ इस प्रभाव को दूर करने के लिए अपने मुस्लिम वोट की अपेक्षा अपने हिन्दू वोट पर अधिक ध्यान दे रही हैं, कि कहीं मुस्लिम हितैषी आरोप के नतीजे में हिन्दू वोट उनके हाथ से न निकल जाये, दूसरी एक वजह यह है कि पिछले एलेक्शन में मुस्लिम वोट बिलकुल बे असर साबित हुआ, उसकी वजह चाहे वोटों का बटवारा हो, वोटर लिस्ट की त्रुटियाँ हों, वोटर्स का वोट डालने के लिए न निकलना हो, जो भी हो, मुस्लिम वोट के बारे में जो एक आम ख्याल था, वह यह था कि वह जिता भी सकता है और हरा भी सकता है, यह ख़्याल पिछले एलेकशन में ग़लत साबित हुआ, नतीजा उसका अब यह निकला कि उसकी क़ीमत बिल्कुल घट गई, गोया कि एलेकशन में उसकी इफ़ादियत (उपयोगिता) कम हो गयी, हमें अगर अपनी हैसियत मनवाना है तो हमें मुत्तहिद हो कर अपनी अहमियत और उपयोगिता को साबित करना होगा और हमें अपने को उस मुक़ाम पर लाना होगा कि सियासी पार्टियाँ यह समझें कि हम जिता भी सकते हैं और हरा भी सकते हैं। ◆◇◆

जुल्म सहना भी तो जालिम की हिमायत ठहरा
खामोशी भी तो हुई पुश्त पनाही की तरह

आओ लोकतंत्र बचायें

उप सम्पादक

- वोट देश के हर नागरिक का संवैधानिक अधिकार है।
- अपने अधिकार का प्रयोग करके देश के अच्छे नागरिक होने का सुबूत दें।
- देश के लोकतंत्र की हिफ़ाजत हर नागरिक का प्रथम कर्तव्य है।
- अशिक्षा, बेरोजगारी, अन्याय, अत्याचार, अशांति के खिलाफ उठ खड़े हों।
- अम्न व भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए वोट दें।
- सकारात्मक बनें, नकारात्म –कता से दूर रहें।
- अपने एक–एक वोट का मूल्यांकन करें, खूब सोच विचार कर वोट दें, वोट को बर्बाद जाने से बचायें।

सभी की सुनें सभी को जानें,
निर्णय अपने मन का मानें।

❖❖❖

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

—मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

मक्के के मुशरिकों के अक़ीदे और तौहीद—ए—रुबूबियत (एक अल्लाह को ही रब मानना):—

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अगरचे पूरे आलम के लिए और हमेशा हमेश के लिए रसूल बना कर भेजा गया है, फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबसे पहले सम्बोधित लोग मक्के वाले ही थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उनके सामने तौहीद की दावत पेश की, तो उन्हों ने साफ़ कहा कि हम इबादत का असली धुरी अल्लाह ही को समझते हैं, हाँ! दूसरों की इबादत हम इसलिए करते हैं कि वो हमें अल्लाह से क़रीब कर दें, कुरआन मजीद में उन की इस बात का ज़िक्र मौजूद है।

अनुवादः— *"हम इनकी इबादत इसलिए करते हैं ताकि ये हमें अल्लाह से क़रीब कर दें।"*

(सूरह : अल—ज़ुमर :3)

इससे साफ़ मालूम होता है कि वो अल्लाह को खुदा समझते थे, और उसको रब मानते थे, लेकिन इबादत में वो दूसरों को भी शरीक करते थे, इस का भी इतिहास हमें एक हदीस से मालूम होता है कि वो जिन मूर्तियों —वद्द, सोवा, यगूस, यऊक़ और नस्र— को पूजते थे, उनके बारे में हदीस में है कि ये सब नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के नेक लोग थे, जब ये इंतेक़ाल कर गए तो शैतान ने लोगों को ये बात समझाई कि ये नेक लोग जिस जगह बैठते थे वहाँ पत्थर लगाओ और उस पत्थर को उनके नाम से पुकारो, तो उन्हों ने ऐसा ही किया, फिर जब ये लोग मर गए, और उनसे इल्म उठ गया तो उनकी औलाद ने उन पत्थरों और स्मृतिकाओं की पूजा शुरू कर दी।

(सहीह अल—बुख़ारी : 492)

ये मूर्ती पूजा का इतिहास है, लेकिन इस मूर्ती पूजा के साथ वो यक़ीन रखते थे कि अल्लाह ही ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला है, असल अधिकार और अमल दख़ल उसी के क़ब्ज़े में है, उनके इस अक़ीदे का ज़िक्र कुरआन मजीद में मौजूद है।

अनुवादः— *"पूछिए कि ज़मीन और ज़मीन में जो कुछ है वो किस का है (बताओ) अगर तुम ज्ञान रखते हो। पूछिए सातों आसमानों और महान अर्श का मालिक कौन है? वो फ़ौरन यही कहेंगे कि अल्लाह के हैं। कहिये! फिर भी तुम डर नहीं रखते ? पूछिए ! हर चीज़ की बादशाहत किस के हाथ में है और वो पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता, बताओ अगर तुम जानते हो?वो फ़ौरन यही कहेंगे कि अल्लाह के हाथ में। आप कह दीजिये तो कहाँ का जादू तुम पर चल जाता है ?!"*

(सूरह : अल—मोमिनून : 84—88)

इसी का नतीजा था कि जब वो किसी सख़्त मुसीबत में घिर जाते तो बेझिझक अल्लाह ही को पुकारते फिर जब मुसीबत से छुट्टी मिल जाती तो दूसरों की पूजा करने लगते, कुरआन मजीद में उनके इस कार्यशैली का ज़िक्र भी मौजूद है

अनुवादः— *"यहाँ तक कि तुम जब नावों में (सवार) होते हो*

और सुहानी हवा के ज़रिये वो लोगों को लेकर चलती हैं और लोग उसमें मग्न हो जाते हैं तो एक सख़्त आँधी उनके पास आ जाती है और हर तरफ़ से मौजें उन पर उठती हैं और वो समझ लेते हैं कि वो उसमें घिर गए तो इबादत में एकाग्र हो कर वो अल्लाह को पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे बचा लिया तो हम ज़रूर शुक्र करने वालों में होंगे।"

(सूरह : यूनुस : 22)

इन आयतों से साफ़ ज़ाहिर होता है कि वो अल्लाह को रब मानते थे और बड़ी हद तक एक ही रब के क़ायल थे, मगर अल्लाह के साथ दूसरों की भी इबादत करते थे, और उनके लिए नज़र व नियाज़ करते थे, और इसको अल्लाह से क़रीब होने का ज़रिया समझते थे, इसलिए उनको "मुशरिक" क़रार दिया गया, ये चीज़ इस्लामिक परिभाषा में "इबादत में शिर्क" कहलाती है, जबकि तौहीद के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह को एक अकेला रब मानने के साथ साथ सिर्फ़ उसी को ही इबादत के लायक़ भी समझा जाए।

तौहीद–ए–उलूहियतः–

इसको "तौहीद–ए–इबादत" भी कहते हैं, इसका मतलब ये है कि इबादत और उसकी सारी क़िस्मों को सिर्फ़ अल्लाह के लिए ही शुद्ध कर लिया जाए, मिसाल के तौर पर दुआ, मन्नत, कुर्बानी, झुकना, अपने आपको किसी के सामने ज़लील करना, आदर के वो काम जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए सही हैं, जैसे सज्दा, रुकू वग़ैरह, सारांश ये कि इबादत की सारी क़िस्में ज़ाहिरी हों या आंतरिक सिर्फ़ अल्लाह के लिए ख़ास कर ली जाएँ, उनमें किसी को भी अल्लाह के साथ शरीक न किया जाए, चाहे वो नबी हो या फ़रिश्ता, वली हो या शहीद, यही वो तौहीद है जिसका ज़िक्र कुरआन मजीद की इन आयतों में किया गया है ।

अनुवादः– *"ऐ अल्लाह! हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं।"*

(सूरह : अल–फ़ातिहा 4)

अनुवादः– *"तो आप उसी की बंदगी में लगे रहें और उसी पर भरोसा रखें।"*

(सूरह हूद :123)

अनुवादः–*"वो आसमानों और ज़मीन का और दोनों के दर्मियान जो भी है उन सब का रब्ब है, तो आप उसी की बंदगी करें और उसी की बंदगी में लगे रहें, क्या इस नाम का और भी कोई है जिस से आप अवगत हैं।" (सूरह मरयमः 65)*

"इलाह" कहते हैं उसको जो इबादत के लायक़ हो, मक्के के मुशरिक क्योंकि अल्लाह के साथ दूसरों की इबादत करते थे, इसलिए उन्हों ने बहुत से उपास्य बना लिए थे, एक "इलाह" की उनके यहाँ अवधारणा ही नहीं रह गयी थी, इसीलिए जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर्फ़ एक ही रब की इबादत की दावत पेश की तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ, कुरआन मजीद ने इस को इस तरह बयान किया है।

अनुवादः– *"भला उसने अपने उपास्यों की जगह एक ही उपास्य रहने दिया? वाक़ई ये बहुत ही अजीब बात है।"*

(सूरह साद : 5)

अब इन दोनों बातों को समझने की ज़रूरत है, ऊपर गुज़र चुका है कि वो रब को एक मानते थे, और उसी को वास्तविक रूप से ख़ालिक़ (सृष्टा) व मालिक समझते थे, लेकिन इबादत में दूसरों को भी शरीक करते थे, और बहुदेववादी थे, इबादत में शिर्क की वजह से

उनको मुशरिक शुमार किया गया, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको तौहीद–ए–इबादत और तौहीद–ए–उलूहियत की दावत दी, और फ़रमाया–

अनुवादः– *"मान लो कि "अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं" कामयाब हो जाओगे" (मुसनद अहमद बिन हम्बल :19520)*

माबूद (उपास्य) कहते ही उसको हैं जिसकी इबादत की जाए, कुरआन मजीद में जगह जगह शिर्क की इसी क़िस्म को जड़ से उखाड़ा गया है।

अनुवादः– *"और तुम्हारा माबूद (उपास्य) तो एक ही माबूद है उस रहमान व रहीम के अलावा कोई माबूद नहीं।"*

(सूरह अल–बक़रह :163)

अनुवादः– *"और जो भी अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को पुकारेगा जिसकी उसके पास कोई दलील नहीं तो उसका हिसाब उसके रब के पास होगा, काफ़िर हरगिज़ हरगिज़ कामयाब नहीं हो सकते।"*

(सूरह अल–मोमिनूनः 117)

अरब के मुशरिक अल्लाह तआला के वजूद को मानते थे, ज़मीन व आसमान का मालिक व ख़ालिक़ (सृष्टा) उसी को समझते थे, मुश्किल वक़्त में उसी को पुकारते थे, उसको अपना रब समझते थे, मगर इसके बावजूद उनको अल्लाह ने मुशरिक क़रार दिया, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़िन्दगी भर उनसे जंग जारी राखी, इसकी वजह सिर्फ़ ये है कि वो अल्लाह को खालिक़ (सृष्टा) व मालिक मानने के बावजूद दरमयानी वास्तों के इस तरह क़ायल थे कि उनकी नज़र व नियाज़ करने और वो आमाल जो हक़ीक़त में इबादत वाले आमाल हैं, उन आमाल में वो दर्मियानी वास्तों को शरीक कर लिया करते थे, उनको इस शिर्क से रोका गया साफ़ साफ़ तौहीद की दावत दी गयी।

अनुवादः– *"हमने ठीक ठीक किताब आप पर उतार दी उसी के लिए ख़ालिस कर के उसकी इबादत करते रहिये।"*

(सूरह अल–ज़ूमर :2)

उन्होंने इसका जो जवाब दिया उसको कुरआन ने बयान किया है।

अनुवादः– *"हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं ताकि वो हम को खुदा से क़रीब कर दें।" (सूरह अल–ज़ूमरः 3)*

यही वजह है कि अल्लाह तआला ने उनके बारे में ये फ़रमायाः

अनुवादः– *"उनमें अक्सर अल्लाह को नहीं मानते हैं मगर इस तरह कि उसके साथ दूसरों को शरीक करते हैं।"*

(सूरह यूसुफ़ः 106)

अरब के मुशरिक इबादत के आमाल में ग़ैरों को शरीक करते थे और कहते थे कि ये शिर्क नहीं है, ये शिर्क उस सूरत में होगा जब हम ग़ैरों को ख़ालिक़ (सृष्टा) व मालिक भी समझें, ऊपर आयतों में इसका ज़ोर दे कर खंडन किया गया है। और इस मानसिकता को खुला हुआ शिर्क करार दिया गया है। ◆◇◆

जालिम था वह और जुल्म की आदत भी बहुत थी
मजबूर थे हम, उससे महब्बत भी बहुत थी

कलीम आजिज

जुल्म के होते अम्न कहाँ मुमकिन यारो
इसे मिटा कर जग में अम्न बहाल करो

कर सकते थे जो अपने ज़माने की इमामत

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

—हिन्दी अनुवादः जमाल अहमद नदवी

मुसलमान इस समय जिन मसायल से घिरे हुए हैं उनकी अहमियत से शायद ही किसी को इंकार हो, यह मसायल हमेशा पेश आने वाल दूसरे नये नये मसायल से बिल्कुल अलग हैं इसलिए इनसे न सरसरी गुज़ारा जा सकता है, न कांफ्रेंस और कंवेंशन से इनका हल निकाला जा सकता है, यह बात रस्मी जल्सों और कांफ्रेंसों से आगे बढ़ चुकी है।

हम अब एक निर्णायक मोड़ पर हैं, इस समय हमारी छोटी सी गलती या गफ़लत आने वाली नस्लों की तबाही व बर्बादी का रास्ता खोल सकती है और हमेशा के लिए ज़िल्लत व गुलामी के फंदे में हम जकड़े जा सकते हैं।

इस समय हिन्दुस्तान में अनेकों ऐसी जमातें और पार्टियाँ काम कर रही हैं, जो मुसलमानों के वजूद को किसी क़ीमत पर गवारा करने के लिए तैयार नहीं, वह अपनी चरमपंथी ज़ेहनियत और बेहद संकीर्ण मानसिकता की वजह से मुसलमानों को विदेशी और बाहर से आने वाली क़ौम तसव्वुर करती हैं, उनके नज़दीक मुस्लिम क़ौम मुल्क़ में मिले अधिकार से किसी भी प्रकार से लाभांवित होने की हक़दार नहीं है, उनका कहना है कि मुसलमान इस देश को खाली कर दें नहीं तो फिर उनको बहुसंख्यक के साथ इस प्रकार रहना होगा कि वह उनसे किसी हाल में अलग न हों, ज़बान, कलचर, रुसूम—रिवाज, यहाँ तक कि मज़हब में भी उनके पाबन्द बन कर रहें, और अपने पूरे जीवन को बहुसंख्यक के जीवन में रंग लें, दूसरे शब्दों में वह नाम के मुसलमान बाक़ी रहें, लेकिन अस्ल में वह गैरमुस्लिम हों, उनके नज़दीक हिन्दुस्तान सिर्फ और सिर्फ हिन्दुओं का मुल्क है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अपना स्टेंड तै करें, और हुकूमत के सामने अपनी पोज़ीशन स्पष्ट शब्दों में पेश करने की आदत डालें और साफ़ साफ़ इस बात का ऐलान करें कि मुसलमानों का अधिकार इस मुल्क के कण कण पर उतना ही है जितना दूसरी क़ौमों और वर्गों का हो सकता है, वह मुल्क के समस्त हालात व मसायल और हर प्रकार के उतार चढ़ाव में बराबर के शरीक़ हैं, और उनको यहाँ की तमाम परम्पराओं, तमाम मसायल व परेशानियों में भाग लेने और उसके लिए सोचने का पूरा पूरा हक हासिल है, यह कभी नहीं हो सकता कि मुसलमान कुछ लोगों की बुज़दिलाना हरकतों और आग व खून की दास्तानों से प्रभावित हो कर एक कमज़ोर और बुजदिल क़ौम की तरह अपने सारे मुल्की व क़ौमी धरोहरों को छोड़ कर चले जायें, या यहां रह कर अपनी तमाम दीनी—दावती

और मज़हबी परम्पराओं, पहचान को छोड़ कर बहुसंख्यक के रंग में रंग जायें, और हर जुल्म, अन्याय के आगे सर झुका दें।

इस वास्तविक्ता के इज़हार में हमको एक पल के लिए भी संकोच न होना चाहिए कि मुसलमानों को यहाँ हर क़ीमत पर मुसलमान बन कर रहना है और अपनी समस्त इस्लामी खुसूसियात और दीनी व मिल्ली विश्वासों से जुड़ कर और उन पर अमल करते हुए रहना है, हमारी सब से बड़ी कमज़ोरी और ज़िल्लत व रुस्वाई का एक बड़ा कारण यह है कि हम ज़ियादातर अपनी इस्लामी मान्यताओं से दूर हो गये हैं, उसी का परिणाम है कि हमको डराने वाले डरा रहे हैं, हमारे खिलाफ़ साजिशें करने वाले निरन्तर साज़िश कर रहे हैं, और बराबर हुकूमत से रहम और न्याय की भीख मांग रहे हैं, समानता और सेकुलरिज्म के नाम पर उसकी दुहाई दे रहे है, और हर वह काम करने पर आमादा व तैयार हैं जो एक मुसलमान के लिए आख़री दर्जे की ज़िल्लत व रुसवाई बल्कि गुलामी के समान है अगर हम बाइज़्ज़त क़ौम बन कर रहना चाहते हैं और अपना मकाम व मर्तबा दुन्या से मनवाना चाहते हैं तो हम को इन हक़ीर व ज़लील कार्यों से अपने को दूर रखना होगा, न्याय की भीख मांगना, दया की अपील करना, इन्सानियत का वास्ता देना और ज़िल्लत व रुस्वाई की उस सीमा तक पहुंच जाना जहां हम चूहे बिल्लियों की तरह क़त्ल कर दिये जायें और कीड़े मकोड़े की तरह मसल दिये जायें, किसी बाइज़्ज़त क़ौम का तरीक़ा हरगिज़ नहीं हो सकता, मुसलमान क़ौम तो पूरी दुन्या की सबसे बाइज़्ज़त क़ौम है और उसका मक़ाम तो दुन्या में अल्लाह के नायब व खलीफ़ा का है जिस पर फरिशतों को भी गर्व आता है।

हमारे सारे मसायल का समाधान सिर्फ खुदा पर सही भरोसा और आत्मनिर्भता में छुपा है अगर हम बाइज़्ज़त ज़िन्दगी चाहते हैं तो हमको मुसलमान क़ौम का सही और पूर्ण नमूना बनना होगा, ईमान व गैरत की दबी हुई चिंगारी को फिर से रौशन करना होगा, इस्लामी विशेषताओं को अपनाना होगा और दुन्या को यह बताना होगा कि इस्लाम एक मिसाली और पूर्ण दीन व मज़हब है जिसके आज्ञाकारी भी मिसाली और मुकम्मल होते हैं, हमको अपनी तमाम चीज़ों में तब्दीली लानी होगी, बोल–चाल रहन–सहन, भेस भूषा, दुकान मकान चाल चरित्र आदि जब तक हमारी समस्त ज़िन्दगी मुकम्मल इस्लामी ज़िन्दगी का नमूना न होगी, अन्य क़ौमें हमसे प्रभावित हो कर प्रेरणा न लेंगी और हमको अहमियत न देंगी।

आज अगर हम अपनी पूरी जीवनशैली का आंकलन करें तो एक दो प्रतिशत भी इस्लामी ज़िन्दगी का हिस्सा नज़र न आयेगा उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि समस्त परेशानियों को सिर्फ दुन्यावी तरीक़ों से सोचते हैं और उन्हीं

को कामयाबी अथवा नाकामी का मेयार मान लिया है और इसी ढर्रे पर सोचने के हम आ़दी हो गये हैं, ईमान की ताक़त, ख़ुदा पर भरोसा हमारे अंदर से ग़ायब हो गया और इसी ने हमको इस निचले स्तर पर पहुंचा दिया है कि अब हमें दुन्या और उनके संसाधनों के अलावा कुछ नज़र ही नहीं आता।

मौजूदा हालात को सामने रखते हुए मुसलमानों ने अगर कोई कंवेंशन या कांफ्रेंस आयोजित की तो इसमें शक नहीं कि उसके असरात परिपूर्ण हो सकते हैं, लेकिन अपने भीतर सुधार की आवश्यकता सबसे ज़रूरी है, दिल–दिमाग जब तक दुरुस्त न होगा और इस्लामी विशेषताओं और अपनी क़ौमी व समाजी परम्पराओं को जब तक हम नहीं अपनायेंगे और अपने ही देश में जीने और मरने का संकल्प नहीं लेंगे उस समय तक मुकम्मल कामयाबी ना मुम्किन है, कुरआन मजीद का यह इरशाद इसी हक़ीक़त की ओर रहनुमाई करता है, अनुवादः ''और हुक्म भेजा हमने मूसा अलै0 और उनके भाई को कि मुक़र्रर करो अपनी क़ौम के वास्ते घर मिस्र में, और अपने घरों को किब्ला रुख़ बनाओ, और नमाज़ क़ायम करो और खुशख़बरी दो ईमान वालों को'' (सूरः यूनुस–13)

अपने वतन में रहने और घर बनाने और घरों को क़िब्ला रुख़ बनाने का आदेश इसलिए दिया जा रहा है ताकि वह इस्लामी घर की अलामत समझा जाये और उसके बाद नमाज़ कायम करने का हुक्म है, अगर हम गौर करें तो साफ़ ज़ाहिर होगा कि क़ौम की ज़िन्दगी व मौत की निर्भरता उनकी क़ौमी व समाजी मान्यताओं तथा विशेषताओं पर है, अगर उन्होंने अपनी मान्यताओं को पीछे छोड़ कर और अपनी क़ौमी व मज़हबी विशेषता खत्म करके दूसरों की ज़िन्दगियों को रश्क की निगाह से देखना शुरु कर दिया या अपनी मान्यताओं को ताक पर रख कर गैरों में इस तरह घुल मिल गये कि अपनी विशेषता ही खो बैठे तो बिना संकोच यह बात कही जा सकती है कि यह ज़िन्दा क़ौम की निशानी नहीं और न ऐसी क़ौमें दुन्या में अपना कोई मक़ाम व मरतबा पैदा कर सकती हैं।

किसी कार्य के करने से पहले हमको यह तय कर लेना है कि ऊपरी तथा अंदरूनी दोनों शक़्लों से हमको मुसलमान रहना है। अपनी इस्लामी शान का हमको हर जगह और हर समय प्रदर्शन करना है, इस्लामी मान्यताओं से अलग हो कर सरकारों के रहम–करम पर जीना, न्याय की अपील करना, और मानवता का वास्ता देना मुसलमान जैसी अज़ीम और ज़िन्दा व गतिशील क़ौम का आचरण हरगिज़ नहीं हो सकता, आज की सबसे बड़ी मुसीबत यही है कि हर चीज़ का इलाज हम दूसरों में ढूँढते हैं और ख़ुद अपने मक़ाम व मंसब से बिल्कुल गाफिल और अनभिग्य हैं।

कर सकते थे जो अपने ज़माने की इमामत।
वह कोहना दिमाग़ अपने ज़माने के हैं पैरु।।

❖❖❖

जीवन का एक सुनहरा साल गया

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

बीता वर्ष 2021 कभी न भूलने वाली त्रासदी के रूप में याद रखा जायेगा, इस वर्ष में किसी के सपने खत्म हुए तो किसी के अपने। इसमें खुशियों से ज़ियादा ग़म मिले। पिछले साल दुन्या भर में लाखों लोग कोरोना संक्रमण के गाल में असमय ही समा गये। आज़ाद भारत में भी खौफ का ऐसा भयावह मंज़र शायद ही कभी देखा गया हो, क़यामत का वह मंज़र जिसका नक्शा कुर्आन ने यूं खींचा है ''कि उस दिन इंसान अपने भाई, अपने माँ–बाप, अपने बीवी बच्चों से भाग रहा होगा हर एक को सिर्फ अपनी ऐसी फिक्र पड़ी होगी कि उसे दूसरों का होश नहीं होगा'' इस मंज़र का नज़ारा हर एक ने अपने घर, गली, महल्ले में खूब देखा। क्या बीमार क्या सेहतमंद, क्या बूढ़ा, क्या जवान, क्या मर्द, क्या औरत, क्या पढ़ा लिखा, क्या अनपढ़, क्या मज़दूर क्या व्यवसायी हर एक में ख़ौफ इतना कि कोई टेलीफोन से भी किसी की ख़बरगीरी की नैतिक ज़िम्मेदारी उठाने के लिए तैयार न था। अच्छे–अच्छे सेहतमंद लोग भी इसमें समा गये। घरों से ले कर अस्पतालों तक में मौतें इस क़दर हुईं कि शमशान और क़ब्रिस्तान दोनों तंग पड़ गये हर ओर हाहाकार मचा रहा, लोगों न मजबूर हो कर लाशों को ठिकाने लगाने के लिए नदी नालों का सहारा लिया, लाशें हर जगह तैरती नज़र आईं। कोरोना का यह प्रकोप हर क्षेत्र में नज़र आया। स्वास्थ्य, शिक्षा, कारोबार सब बे पटरी हो गये सबसे ज़ियादा नुकसान शिक्षा के क्षेत्र में हुआ और अभी भी उनका यही हाल है। अल्लाह कभी ऐसा मंज़र हमारे देशवासियों को न दिखाये यही हम सब की तमन्ना और दिली ख्वाहिश होनी चाहिए।

इस वर्ष नदवतुल उलमा में भी थोड़े–थोड़े अंतराल पर इंतिक़ाल के कई दुखद हादसात पेश आये जिसने यहां के बड़े ज़िम्मेदारों से ले कर छोटे कारकुनों तक को रंजीदा व दुखी कर दिया। उन जाने वालो में जनाब मौलाना हमज़ा हसनी नदवी रह0 भूतपूर्व नायब नाज़िम नदवतुल उलमा, जनाब अतहर हुसैन साहब ख़ालिदी मोतमद माल नदवतुल उलमा, जनाब मौलाना नजरुल हफ़ीज़ साहब नदवी अजहरी रह0, जनाब रईस अलशाकरी साहब कारकुन शिब्ली लाइब्रेरी, और साल के अंत में सच्चा राही के 20 साल तक निरन्तर सम्पादक रहे डॉ0 हाफिज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0 के जाने से सोगवार हो गया। इन समस्त जाने वालों में हर एक, एक अन्जुमन था विशेष कर मौलाना ह़मज़ा साहब सन् 1999 में जब से नदवतुल उलमा से जुड़े उसको उन्नति पर ले जाने के लिए अथक प्रयास करते रहे और वह उसमें पूरी तरह सफल भी रहे, वह सदेव अपने व्यवसायिक गतिविधियों पर नदवे के कार्यों को वरीयता देते चाहे उनका स्वयं का कितना ही नुकसान हो, जबकि वह नदवतुल उलमा की ख़िदमत बिना सेवा शुल्क किया करते थे। इदारे ने जब भी पेशकश की यह कह कर कबूल करने से मना कर दिया कि हमारे खर्च का इंतेजाम है यह खिदमत हमारे वालदैन के लिए ईसाले सवाब है, अलहमदुलिल्लाह, अपने इस फैसले पर आखरी दम तक

क़ायम रहे, अल्लाह इन तमाम के दर्जात बलन्द फरमाये।

आमीन।

इसी साल बंगाल में बीजेपी की हार, और किसान आन्दोलन के कारण बिल वापस लेना मोदी के वर्चस्व और तिलिस्म को तोड़ता है और बताता है कि कोई अजय नहीं, सब का सूरज ढलता है।

देश में गंगा जमुनी तहज़ीब के समर्थक और मौलिक अधिकारों के लिए सड़क से ले कर संसद तक संघर्ष करने वाले उस समय खुशी से झूम उठे जब तीन काले कृषि क़ानूनों के लिखलाफ एक साल से ज़ियादा चलने वाले किसान आंदोलन में किसानों को सफलता मिली, और अहंकारी सरकार घुटने टेकने पर मजबूर हुई, इस सफलता ने देश को एक नई राह दिखाई और लाखों न्याय प्रिय हिन्दुस्तानियों को एक नया हौसला मिला। किसानों ने अपने संघर्ष से साबित कर दिया कि अगर आप अपने अधिकारों के लिए जागरूक और संघर्षशील हैं तो नामुमकिन को भी मुमकिन बनाया जा सकता है।

सन् 2021 समाप्त हो चुका है और हम सन् 2022 में प्रवेश कर चुके हैं, फरवरी के इस अंक पर ''सच्चा राही'' अपना 20वाँ वर्ष पूरा कर रहा है। इस अवसर पर हम समस्त देशवासियों से कहना चाहते हैं कि आप हरगिज़ मायूस न हों, मायूसी कुफ़्र है, हम नये साल में संकल्प लें कि एक सच्चे हिन्दुस्तानी की तरह हम अपने देश और अपने मौलिक अधिकारों, एकता तथा अखण्डता के लिए अपने जान को भी न्योछावर करने से पीछे नहीं हटेंगे और अपनी योग्यता के अनुसार अपने बच्चों की तालीम पर एक समय भूखे रह कर भी पूरा ध्यान देंगे। और अगर अल्लाह तौफ़ीक़ दे और आपके पास सामर्थ्य हो तो अपने स्कूल, कॉलेज यूनिवर्सिटी बनाने का संकल्प लें, लेकिन याद रहे कि हमारे बच्चे अल्लाह व रसूल की बुन्यादी तालीमात और इस्लामी मान्यताओं से बिल्कुल गाफ़िल न हों, आत्मनिर्भर बनने के लिए अपनी अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनायें और पूरी ईमानदारी से कोई जायज़ कारोबार करें, बेकार में इधर उधर बैठ कर समय बरबाद न करें, देश के बदलते माहौल में काँटों से दामन बचाते हुए आगे बढ़ें, उनसे उलझ कर अपनी ऊर्जा और समय नष्ट न करें, देश के मौजूदा हालात की मांग है कि हम अपनी भावनाओं पर क़ाबू रखें और किसी भी धर्म एवं वर्ग की भावनाओं को आहत न करें, वरना इससे हमारा और हमारी क़ौम ही का नुक़सान होगा, बल्कि अपने बहुसंख्यक देश बन्धुओं से सकारात्मक संवाद शुरु करें इसमें थोड़ी भी देरी हानिकारक होगी। हज़रत मौलाना अली मियाँ द्वारा क़ायम की गई संस्था ''प्यामे इन्सानियत फोरम'' इस क्षेत्र में बड़ा काम कर रही है लेकन और बड़े पैमाने पर करने की आवश्यकता है। साम्प्रदायिकता का जवाब साम्प्रदायिकता हरगिज़ नहीं बल्कि हमें उसका जवाब अमन और आपसी भाईचारा से देना चाहिए, आपसी सदभाव ही हमारे देश की आन बान शान है। जिसकी शोहरत पूरी दुन्या में है। कुछ लोग साम्प्रदायिकता की बातें करते ही इसलिए हैं कि हम उनके बुने जाल में फँस जायें और अपनी सारी ऊर्जा बेकार की चीज़ों और बातों में लगा दें और अपनी बरबादी का सामान अपने हाथों कर लें, इसलिए हमें इनके झाँसों से बचने और अपने पूर्वजों के तरीक़ों पर मजबूती से जमे रहने की ज़रूरत है।

कुछ खुशियाँ कुछ आँसू देकर टाल गया
जीवन का एक सुनहरा साल गया

❖❖❖

नींद क्यों रात भर नहीं आती

—डॉ0 हाफिज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0

जे़हन में ज़मीन क्यों नहीं आती
ज़मीन ग़ालिब की क्यों नहीं भाती
पहले आती थी बात बात पर हंसी
अब किसी बात पर नहीं आती
लिखा मुक़द्दर का कभी नहीं टलता
नींद क्यों रात भर नहीं आती
तौबा हज़ार बार तूने किया
सुकूँ तबियत यह क्यों नहीं पाती
''ला तक़नतू'' जब तूने पढ़ा
रहमते रब नज़र क्यों नहीं आती
निदा आई उम्मीद रख बख़्शिश की
रूह को नींद क्यों नहीं आती
सलाम व रहमत नबी मुहम्मद पर
काश यह आवाज़ अर्श तक जाती
आल और औलाद पर उनके
तीब जन्नत से सदा रहे आती।

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः नमाज़ी के आगे से गुज़रना कैसा है? क्या इससे नमाज़ फासिद हो जाती है?

उत्तरः नमाज़ी के आगे से गुज़रने की वजह से नमाज़ तो फासिद नहीं होगी लेकिन इससे नमाज़ी की तवज्जोह में खलल पड़ जाता है जिसकी वजह से गुज़रने वाला गुनहगार होगा, ऐसे आदमी की हदीस में शैतान से तुलना की गयी है। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब कोई शख़्स किसी ऐसी चीज़ के सामने पढ़ रहा हो जो उसके लिए सुतरे का काम दे रही है, अब कोई शख्स उसके सामने से गुज़रना चाहे तो यह उसको हटा दे (यानी एक हाथ से ढकेल दे) अगर न माने तो उसको मार भी सकता है क्योंकि वह शैतान है।

प्रश्नः फर्ज नमाज़ में मुक्तदी इमाम की क़िराअत के समय या खुद इमाम क़िराअत के समय आँख बंद कर ले तो यह क्या है?

उत्तरः बिना किसी ज़रूरत व मसलहत नमाज़ में आँख बन्द रखना मकरूह है, अलबत्ता अगर सामने कोई चीज़ हो जो ध्यान में खलल डाले या आँखें बन्द करने से ध्यान पैदा होता हो तो मकरूह नहीं है।

(तहतावी पेज 194—195)

प्रश्नः कुर्आन मजीद की क़सम खाना और कुर्आन सर पर रख कर या हाथ में उठा कर किसी बात का वादा करना दुरुस्त है?

उत्तरः कुर्आन मजीद अल्लाह तआ़ला की मुक़द्दस किताब है, मामूली कामों और बातों के लिये उसका इस्तेमाल अदब के खिलाफ है, क़सम खानी हो तो अल्लाह के नाम की क़सम खाये, लेकिन अगर कुर्आन उठा कर क़सम खा ली है तो क़सम हो जायेगी और जो क़सम में इरादा किया है उसका पूरा करना ज़रूरी होगा।

(अल बहरूर्राइक़ 4/482)

प्रश्नः एक लड़के ने क़सम खाई की वह शादी नहीं करेगा, लेकिन वालदैन और घर के दूसरे लोग शादी करने के लिए मजबूर कर रहे हैं तो उनकी खुशी के लिए अगर शादी करे तो क्या क़सम खाने की वजह से गुनहगार तो नहीं होगा, अब क्या करना पड़ेगा?

उत्तरः शादी न करने की क़सम खा लेना सही नहीं है, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने शादी न करके अकेले की ज़िन्दगी को ना पसंद फरमाया है, माँ—बाप की चाहत का एहतराम करना इस्लामी शरीअ़त के बिल्कुल मुवाफिक़ है, चूंकि कुर्आन मजीद की क़सम से भी क़सम हो जाती है, इसलिए इस सूरत में निकाह के बाद क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करना चाहिए, क़सम का कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को दो वक़्त का खाना खिलाना या दस मिस्कीनों को कपड़े पहनाना है, और अगर इसकी सकत न हो तो लगातार तीन रोज़े रखना है।

(किताबुल फतावा 6/31)

प्रश्नः दो मुसलमान आपस में मिल कर कारोबार करते थे, दोनों ने ज़बानी आपसी अनुबन्ध किया था कि हम दोनों मिल कर हमेशा कारोबार करेंगे मगर कुछ दिनों के बाद दोनों में फूट व दूरी पैदा हो गयी, उनमें से हर एक ने अपना अनुबन्ध तोड़ दिया, अब सवाल यह है कि क्या उन दोनों को कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा? या अनुबन्ध तोड़ने के गुनाह से बचने की कोई और सूरत है, रहनुमाई करें?

उत्तरः अगर क़सम नहीं खाई थी सिर्फ वादा मुआहदा किया था और बिना किसी शरई सबब के तोड़ दिया तो उससे गुनाह हुआ, और अगर कोई ऐसी उचित समस्या पेश आ गई तो वादा तोड़ने का गुनाह नहीं होगा, बिना किसी उचित वजह के वादा खिलाफी करने पर गुनाह होगा उसके लिए तौबा व इस्तिग़फार लाज़िम है।

(अल अशबाह वन्नज़ायर पेज–159)

प्रश्नः एक शख़्श से एक गलती हुई, उसने भरी महफिल में इस गलती से इंकार करते हुए झूठी क़सम खा ली, बाद में उसको एहसास हुआ कि उसने झूठी क़सम खाई है और अब शर्मिंदा है, ऐसी सूरत में वह क्या करे? क्या इसमें क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करना होगा?

उत्तरः अगर झूठी क़सम जान बूझ कर खाई है तो यह सख़्त गुनाह है, कफ़्फ़ारा नहीं है, इस संगीन गुनाह की माफी के लिए तौबा व इस्तिग़फार ज़रूरी है।

(मुल्तका अल अब्हर 260/261)

प्रश्नः क्या नाबालिग़ बच्चे की क़सम का एतिबार होगा? अगर नाबालिग बच्चा अपनी क़सम तोड़ दे तो क्या चीज़ सद्क़ा करना होगी?

उत्तरः क़सम के सही होने के लिए एक शर्त यह भी है कि क़सम खाने वाला बालिग़ भी हो, नाबालिग की क़सम का शरीयत ने ऐतबार नहीं किया है चुनांचे अगर वह क़सम खा ले और फिर क़सम तोड़ दे तो उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा भी नहीं।

(बदा–ए–सनाये 3/20)

प्रश्नः कफ़्फ़ारा किसे कहते हैं?

उत्तरः कफ़्फ़ारे में दस गरीब भूखों को सुब्ह शाम दो वक़्त पेट भर कर खाना खिलाना या दस गरीबों को कपड़े पहनाना है, अगर इन दोनों चीज़ों में से किसी चीज़ की ताक़त न हो तो तीन रोज़े लगातार रखने हैं, कुर्आन मजीद में इसकी वज़ाहत मौजूद है। बड़े–बड़े मुफतियों ने भी वज़ाहत फरमाई है।

(रद्दुल मुख्तार 3/62)

प्रश्नः अगर कोई शख़्स अपने किसी खास रिश्तेदार के घर न जाने की क़सम खा ले और कुछ वर्षों के बाद हालात में तब्दीली आने पर आना जाना शुरु कर दे तो क्या इसकी वजह से कफ़्फ़ारा वाजिब होगा?

उत्तरः ऐसी बातों की क़सम न खानी चाहिए जिससे रिश्ते नाते टूट जायें और दूरी पैदा हो जाय, लेकिन अगर ऐसी क़सम खा ली, तो उस पर अड़े रहने के बजाय क़सम तोड़ कर कफ़्फ़ारा अदा करना चाहिए, और कफ़्फ़ारा अपने खाने पीने के मेयार के एतिबार से दस गरीबों को मीडियम दर्जे का दो वक़्त का खाना खिलाना या उनके कपड़े बनाना, अगर इन दोनों में से कोई चीज़ न कर सके तो फिर तीन दिन रोज़ा रखना भी काफी है।

(सूरः माइदा–89)

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

बहुविवाह के जायज होने के बारे में आलोचक क्या कहते हैं:–

चंद बीवियां रखना जो लोग सही नहीं समझते उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें अपने बारे में इस्लामी कानून जानने और कुरआन व हदीस से अवगत होने का गुमान भी है इस किस्म के लोगों के लिए कुरआन मजीद की आयतों और हदीसों की वे व्याख्याएं, जिन में बहु विवाह का जायज होना खुले तौर पर मौजूद है, उनकी परेशानी का कारण बनती हैं इसलिए ये अजीबो गरीब किस्म के औचित्यों का सहारा लेते हैं जैसे उनमें से कोई ये औचित्य पेश करता है कि ''हुजूर (स०) की व्याख्या का मकसद ये नहीं है एक बीवी से आगे बढ़ कर चंद बीवियों के रखने को जायज़ किया जाए बल्कि सिर्फ प्रचलित बहु विवाह को सीमित करना मकसद था'' लेकिन हर जानकार समझता है कि कुरआन व हदीस के जाहिरी मतलब के बिल्कुल ये उल्टा मात्र एक दावा है जिसके लिए दलील चाहिए और शायद ये कहना अतिशयोक्ति से खाली होगा कि ठीक इस दावे पर शरीयत के जाने पहचाने और उसके माने हुए प्रमाणों से कोई सही प्रमाण स्थापित करना मुश्किल है क्योंकि इस पूर्ण दावे का पूरा समर्थन ना कुरआन की आयतों और उसके प्रसंगों से होता है ना हदीसों से इसके अलावा उम्मत के बुजुर्गों और उलमा–ए–किराम के कथनों से भी दलील लेना कठिन है बल्कि सच तो ये है कि इसके विपरीत कुरआन की आयत :–

''तो निकाह कर सकते हो उनके अलावा दूसरी हलाल औरतों से दो–दो से तीन–तीन से चार–चार से''।

(सूरः निसा–3)

इस आयत में जिस अंदाज से बहुबिवाह के हुक्म का जिक्र किया गया है इससे बढ़ोतरी और बहु विवाह के जायज़ करने के रुझान ही का पता चलता है ना कि इसमें कमी व ''सीमितता'' का, और ये बात आरंभिक दौर और उसके बाद यानी हर दौर के उलमा ने इस आयत को समझी है मिसाल के तौर पर करीब के ज़माने के मशहूर गहरी नज़र रखने वाले मुफस्सिर अल्लामा महमूद आलूसी अपना यही एहसास लिखते हैं :–

यहाँ इस वाक़िये का जिक्र भी दिलचस्पी से खाली ना होगा कि वर्तमान पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के दौर से पहले (अक्सर उलमा और मुजतहिद फकीहों के इस मसलक से अलग राह चलने वाले) कुछ शीया उलमा और कुछ ज़ाहिरी मसलक के मानने वालों ने बीवियों की तादाद चार तक ही में सीमित ना होने का आयत से अर्थ लिया है। इससे कम से कम ये बात तो मालूम हुई कि अरबी भाषा के अंतर्गत चार से ज़ियादा की तो गुंजाईश है इस के विपरीत पहलू की नहीं क्योंकि ये उलमा अरबी से वाकिफ़ तो निश्चित रूप से थे। लेकिन हमारी जानकारी की हद तक किसी ने चार से कम तादाद के अंदर जायज़ होने को सीमित कर देने

के लिए आयत से दलील नहीं ली अतः किसी ने 9 किसी ने 18 और किसी ने असीमित संख्या के जायज़ होने को आयत से दलील निकाली और इस हक़ीक़त का तो इंकार ही मुश्किल है कि इस मसले में आयत से चार तक की तादाद के जायज़ होने का अर्थ निकलता है।

ये बात अरबी भाषा में महारत रखने वालों से छिपी हुई नहीं अल्लामा आलूसी ने इस बहस को बहुत ही विस्तार से कई पृष्ठ में बयान किया है और अक्सर उलमा का मसलक दलीलों से साबित किया है आलूसी से पहले इमाम जाहिदी ने दो औरतों से निकाह करने का आयत से मुस्तहब होना समझा था उनकी दलील ये है कि इस जगह अल्लाह तआला ने सबसे पहले दो–दो से निकाह कर लेने का ही हुक्म दिया है जैसा कि मुल्ला जीवन लिखते हैं।

और इमाम जाहिदी ने फरमायाः– ''एक के बजाय दो से शुरआत करना दो से शादी करने के मुस्तहब होने की दलील है''।

(तफ़सीरात–ए–अहमदिया पृष्ठ–168)

इसके अलावा ये कि अगर थोड़ी देर के लिए बिना दलील बल्कि दलील के विपरीत ये बात मान भी ली जाए कि आयत के नाज़िल होने का कारण या ''शरीयत–ए–मुहम्मदी'' की मंशा ''असीमित शादी करने की इजाज़त'' को सीमित करना है तब भी एक बीवी पर मज़बूर करने और बहु विवाह पर क़ानूनी पाबन्दी लगाने का वैज्ञानिक रूप में आयत से जायज़ होने का मतलब निकलना मुश्किल है क्यों कि ये सर्वसम्मत नियम का दर्जा रखता है।

तकरीबन यही बात शैख अबू बक्र जस्सास राज़ी ने भी एक अवसर पर कही हैः–

हमारे यहाँ किसी आयत का किसी खास कारण के अंतर्गत नाज़िल होना या बिना कारण के नाज़िल होना दोनों बातें बराबर हैं क्योंकि हुक्म शब्द आम होने के अनुसार आम होता है किसी खास कारण से आयत के नाज़िल होने की वजह से उसके अंदर कोई खुसूसियत नहीं पैदा हो जाती।

सारांश ये है कि वर्तमान के मॉर्डन और पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित लोग और विगत ज़माने के कुछ उलमा ये दोनों गिरोह चरमपंथ के शिकार हैं उदार और सही राह वही है जिसे अधिकांश उलमा ने अपनाया है।

ऊपर की लाइनों में जिस आयत से बहस की जा रही थी जिसका अर्थ बयान किया गया चंद बीवियों के रखने को नाजायज़ समझने वाले इतने ही पर बात ख़त्म नहीं करते बल्कि उनमें से कुछ ऊपर वाले अर्थ से भी आगे बढ़ कर हास्यास्पद आश्चर्यजनक और कुरआन के भाव से बहुत दूर आयत का मतलब ये बताते हैं कि ''आयत में सिर्फ यतीम बच्चियों के साथ एक से ज़ियादा निकाह करने की इजाज़त है और ये उनकी सरपरस्ती का एक हल है यतीम बच्चियों के अलावा दूसरी औरतों से इस तरह निकाह की इजाज़त नहीं।

जबकि खुद हुज़ूर (सल्ल0) कि जिन पर कुरआन नाज़िल हुआ और जिनका अस्ल मकाम (कुरआन की व्याख्या के मुताबिक़) कुरआन मजीद की आयतों की व्याख्या और तफ़सीर करना है

उनसे डायरेक्ट फ़ायदा उठाने वाली और तन्हाई और लोगों के बीच में रह कर आप (सल्ल०) की बातों को याद रखने वाली इल्म वाली बीवी ही इस आयत का मतलब ये बताती हैं कि इस आयत के नाजिल होने का सबब ये हुआ की यतीम बच्चियों के साथ निकाह कर के ही उन पर जुल्म किया जाता था और निकाह दर असल उनका माल हजम कर जाने और जायदाद पर कब्जा कर लेने का बस बहाना होता था वरना उन लोगों का मकसद न उन्हें बीवियां बना कर रखना होता था और न वैवाहिक अधिकार देना उनके मद्दे नजर होता था और उन्हें ऐसी बे यारो मददगार ''बीवियों'' की तरफ़ से अपने अधिकार मांगने के दावे का खतरा भी किसी तरफ़ से नहीं होता था।

इस लिए ऐसी स्वार्थपूर्ण शादियों से कि जिनमें यतीम मगर मालदार बच्चियां कंगाल बनाकर छोड़ दी जाएं, रोका गया और कह दिया गया कि (हलाल औरतों में) इन बच्चियों के अलावा भी तो सारे जहाँ के अंदर बहुत सी औरतें मौजूद हैं उनमें से जिस को पसंद करो उस से निकाह करलो एक छोड़ चार से ये रिश्ता जोड़ सकते हो मगर इन बच्चियों को ना सताओ और उनकी जिंदगियाँ (सिर्फ नाम के निकाह करके) बर्बाद तो न करो हदीस की सब से ज़ियादा सही और लोकप्रिय किताब बुख़ारी से बस एक हदीस लिखी जाती है।

हजरत उर्वह (रज़ि०) ने हज़रत आइशा (रज़ि०) से इस आयत का मतलब पूछा तो उन्हों ने जवाब में फरमाया ऐ मेरे भांजे! (कभी कभी ऐसा होता कि कोई) यतीम बच्ची किसी (गैर महरम) अभिभावक की सरपरस्ती में होती और वो उसके माल में भी शरीक होती और उस अभिभावक को उसकी शक्ल व सूरत पसंद होती (और अस्ल बात ये होती कि) बच्ची के माल पर उसकी निगाह होती तो यह कि उससे निकाह करे लेकिन उस के सामने न तो पूरा महर अदा करना होता और न वो सारे अधिकार ही देना चाहता जो दूसरे से निकाह करने की सूरत में उस बच्ची को मिलते इसलिए ऐसे (जुल्म व अत्याचार के) निकाह से उन सरपरस्तों को रोका गया है हाँ! अगर ये उन बच्चियों के साथ पूरा इंसाफ़ करें और प्रचलित महर की उच्चतम मात्रा भी दें तो निकाह कर लेने में कोई हरज नहीं वरना उन्हें ये हुक्म है कि इन बच्चियों के अलावा दूसरी औरतों से निकाह करें (एक छोड़ चार से करें)। (बुख़ारी)

सही मुस्लिम में इस आयत की यही तफ़्सीर हज़रत आइशा (रज़ि०) से जिन शब्दों में बयां किया गया है वो इससे भी ज़ियदा साफ़ हैं देखिये।

हज़रत आइशा (रज़ि०) ने इस आयत की तफ़्सीर बयां करते हुए फरमाया :–

आयत ऐसे व्यक्ति के बारे में नाज़िल हुई जिसकी सरपरस्ती में मालदार बच्ची हो और ये व्यक्ति वली (अभिभावक) और वारिस भी हो और उस बच्ची का और कोई ऐसा शुभचिन्तक न हो जो उसका समर्थन करे और हक़ दिलाने में कोशिश कर सके अतः ये व्यक्ति उस बच्ची का किसी दूसरे से निकाह नहीं करता माल की लालच में बल्कि

उससे ख़ुद निकाह करके) उसके साथ ज़ियादती और बदसुलूकी करता रहता है लेहाजा अल्लाह तआला ने हुक्म नाज़िल फरमाया कि अगर तुमको यतीम बच्चियों के साथ इंसाफ न करने का खतरा हो तो (उनके अलावा) जो औरतें तुम्हें पसंद हों उन से निकाह करो यानी वो औरतें जिनके साथ निकाह करना जायज़ है और इस बच्ची का पीछा छोड़ दो कि जिसको (तुम से निकाह के जरिये) नुक़सान पहुँच सकता है।

हज़रत आइशा रज़ि0 की ये तफ़्सीर हदीस की किताबों के अलावा लगभग सारी विश्वसनीय तफ़्सीर की किताबों में भी मिलती है।

यहाँ यह जिक्र कर देना भी ज़रूरी मालूम होता है कि आयत की बस ऊपर जिक्र की गई तफ़्सीर ही कुरआन मजीद के प्रसंग से निकलती है इसके अलावा कोई और तशरीह करके दूसरा मतलब निकाल लेना आसान नहीं क्योंकि इस आयत से पहली आयत में अभिभावकों को यतीमों के माल के सिलसिले में ये निर्देश दिए गए हैं कि तुम लोग (उनका माल हरगिज़ अपने ऊपर खर्च न करना बल्कि) उन्हीं के सिपुर्द कर देना जब वो इसके योग्य हो जाएं उसके बाद उनका माल धोखाधड़ी के साथ हथियाने से सख़्ती के साथ रोका गया क्योंकि कुछ अभिभावकों ने यतीमों के मालों को अपने अधिकार में लाने के लिए ये बहाना अपना रखा था कि उनका माल और अपना माल दोनों को गडमड कर लेते अपना हिस्सा नाम मात्र डाला बाकी सब यतीमों के माल से लिया और मिलजुल खाया पिया ज़ाहिर है कि इस तरह यतीम का सरासर नुकसान होता था मानो इस चाल से अपनी शराफ़त को भी क़ायम रखने की कोशिश करते, लेहाज़ा उनसे साफ कह दिया गया ''यतीमों के मालों को साथ मिला कर भी न इस्तेमाल करो'' और इसे बहुत बड़ा गुनाह बताया गया उसके बाद ये वाली आयत है जिस में बहु विवाह के जायज़ होने का जिक्र है और तादाद की भी हद निर्धारित कर दी गयी है।

यहाँ ये बात भी गौर करने के काबिल है कि अल्लाह के कलाम का अर्थ अगर वही होता जो इस मॉर्डन वर्ग ने बयां किया है तो आयत के अंदर ''फन्किहू मा ताबा लकुम'' के बाद (अरबी भाषा का तकाज़ा ये है कि) ''मिननिसाइ'' के बजाए ''मिनहुन्ना'' या इस जैसा और कोई शब्द होना चाहिए था कुरआन मजीद ही में अलग अलग जगहों पर बहुत सी मिसालें इसकी मिलती हैं बल्कि इसी जगह दो आयत के बाद इसी सूरह की पांचवीं आयत में उनके माल देने का जिक्र है उस में भी ये सबूत मौजूद है देखिये इसके बाद। जिससे साफ मालूम हो रहा है कि अगर इस जगह भी वही यतीम बच्चियां मुराद होतीं जिनके साथ इन्साफ न करने के खतरे का आयत के शुरू में जिक्र है तो वो अंदाज निश्चित रूप से न होता जो इस वक्त है बल्कि इससे अलग होता इसी बुन्याद पर बहुत से तफ़्सीर लिखने वालों और अनुवादकों ने आयत का अनुवाद व तफ़्सीर करते हुए ये बात साफ लफ़्जों में कही है कि ''इन यतीम बच्चियों के अलावा दूसरी औरतों से निकाह करो'

.....जारी.....

हिन्दुस्तानी मुसलमान, एक निर्णायक मरहले में

—इदारा

हिन्दुस्तानी मुसलमान इस वक़्त एक निर्णायक मरहले से गुजर रहे हैं, यहां मिल्लते इस्लामिया हिन्दिया के स्थिरता के लिए एक बड़े प्रतिज्ञा लेकिन ज्ञानात्मक परिश्रम की ज़रूरत है, यहाँ मुसलमानों के मिल्ली वजूद उनकी सामूहिक व्यक्तित्व और उनकी पहचान बाक़ी रखने के लिए कुछ कामों की पूर्ति ज़रूरी है, वह इस मुल्क में मुसलमानों की हैसियत से रहें, सुरक्षित हों, बाइज़्ज़त हों, प्रभावकारी और निर्णायक हों, लाहात व वाक़िआत से भलीभांति निपट सकें, ज़माने और एक तरक़्क़ी करने वाले मुल्क के क़ाफ़िले के साथ क़दम मिला कर चल सकें और इस मुल्क को संगीन ख़तरात, और विनाश व पतन से बचा सकें, लेकिन इस वक़्त सूरते हाल ऐसी हो रही है कि–

कर सकते थे जो अपने ज़माने की इमामत
वह कुहना दिमाग़ अपने ज़माने के हैं पैरो

मिल्लते इस्लामिया हिन्दिया कुछ अर्से से इस मुल्क की ग़ैर इस्लामी तहज़ीब और मुशरिकाना माहौल से प्रभावित हो रही है, आसमानी किताब और पैगम्बरों पर ईमान लाने वाली क़ौम, मुशरिकाना आमाल में ग्रस्त होने की वजह से ख़ुदा की रहमत व कुदरत से दूर और अपमान व सम्मान से वंचित ज़िन्दगी गुज़ार रही है। इसी के साथ कुर्आन व हदीस में जिन आमाल व अख़लाक़ और अमराज़ व अहवाल की निशानदही करके दुन्यावी ज़िन्दगी में उन आमाल व अख़लाक़ का अनजाम और उनके प्रभाव और विशेषताओं का बहुत साफ़ साफ़ शब्दों में उल्लेख है, किसी पर बेबरकती, किसी पर बीमारियों व परेशानियों की अधिकता, किसी पर मौतों की ज़ियादती, किसी पर ज़िल्लत व ख़ुवारी और किसी पर कायरता और भयभीत होने का ऐलान किया गया, अफ़सोस है कि हम हिन्दुस्तानी मुसलमानों की बड़ी तादाद इन बीमारियों में ग्रस्त है।

अक़ीदा, आमाल और अख़लाक़ के फ़साद के अलावा मुसलमानों में एक बड़ी संख्या अमली व एतिक़ादी निफ़ाक़ में ग्रस्त है, तीसरी ओर मिल्ली व इजतिमाई (सामूहिक) ज़िन्दगी में मुसलमानों का जो तर्ज़ अमल कार्य प्रणाली प्रभावकारी हो रहा है, वह है मुसलमानों का अपने ज़ाती मआमलों और मनोरंजन के प्रोगामों में नामवरी व इज़्ज़त के लिए फ़ुजूल ख़र्ची रीति व रिवाज़ की पाबन्दी में पानी की तरह रूपया बहाना और पड़ोसियों, रिशतेदारों के फ़क्र व फ़ाक़ा, दुख भरे हालात से आखें बन्द कर लेना जुर्म है, यह सूरते हाल अल्लाह तआला की हकीम व आदिल ज़ात (सर्व ज्ञाता, न्यायी) और रुबूबियत और अल्लाह की करुणा दया जैसी विशेषता के लिए क्रोध का कारण है, मिल्लत के लाखों बच्चे फ़ीस और किताबों और ज़रूरी खर्च न होने की वजह से तालीम से वंचित हैं, हज़ारों इदारे जो मिल्लत के लिए रूह का हुक्म रखते हैं और बीसों मनसूबे जिनकी पूर्ति के बिना इस मिल्लत का वजूद संदेह जनक और उसका भविष्य अन्धकार में है, इसका क्या औचितय है कि हमारे धनवान करोबारी, और बड़ी हैसियत वाले लोग अपनी औलाद की शादियों और ख़ुशी के मौक़ों और रीत व रिवाज की पूर्ति के लिए पानी की तरह पैसा बहायें और एक एक दअ़वत पर लाखों रूपये खर्च कर दें। इस सिलसिले में सख़्त क़दम उठाने की ज़रूरत है, ऐसे नुमाइशी और दिखावे के कार्यक्रमों को ख़त्म करने का प्रयत्न किया जाये। इन सामूहिक बुराईयों के अलावा मनसूबाबन्द तरीक़े से हमारे नवजवानों को बड़ी संख्या में नशाबाज़ी, जुवा, लॉट्री की लानत और दूसरी

नैतिक बुराईयों में लिप्त किया जा रहा है, सोशल मीडिया की वबा ने उमूमी तौर पर मुस्लिम समाज को प्रभावित किया है।

सबसे अधिक निन्दा और घृणा योगय, अल्लाह के ग़जब और गुस्से को दअ़वत देने वाली चीज़ लड़की वालों से ज़ियादा जहेज़ की मांग, और फ़रमाईशों की वह लिस्ट है जो लड़के या लड़के वालों की ओर से पेश की जाती है और इसको रिश्ते की शर्त क़रार दिया जाता है, कहीं इसको तिलक की रस्म कहीं ''सलामी'' कहीं ''घोड़े जोड़े'' से व्याख्या की जाती है, इस ग़ैर इस्लामी रस्म को पूरा करने के लिए सूदी क़र्ज़ बल्कि जायेदाद को रहन रखने से भी लोग बाज़ नहीं आते, यह चीज़ जो बहुसंख्यक समप्रदाय और हिन्दू समाज से मुसलमानों में आई है इस हद तक पहुंच गई है कि उसने शादी को एक मुसीबत और कठिन काम बना दिया है, इसकी वजह से ऐसी अफ़सोसनाक घटनायें पेश आई हैं और आ रही हैं जिनसे अल्लाह का अज़ाब आ जाने का खतरा है, जहेज़ की लम्बी मांग की वजह से कितने घर और ख़ानदान तबाह हो रहे हैं कितनी लड़कियाँ ज़िन्दा जलाई और मारी जा रही हैं, तमाम समाचार पत्र और पत्रिकायें इसकी गवाह हैं। अफ़सोस है कि ये मर्ज़ खुद मुस्लिम समाज में भी दाख़िल हो गया है और मुसलमान इसको दीनदारी बल्कि इनसानियत व शराफ़त के खिलाफ़ भी नहीं समझते और जहेज़ की लिस्ट में किसी एक चीज़ की कमी होने पर महीनों और बरसों मनकूहा बीवी और बहू के अपने घर आने की इजाज़त नहीं देते। एक ओर यह सामाजी बीमारियां हैं दूसरी ओर मुस्लिम प्रस्नल लॉ में बार बार हस्तक्षेप और उसमें परिवर्तन की मांग हो रही है। यह सब कुछ सिर्फ इसलिए हो रहा है कि हम से अल्लाह के नियुक्त किये हुए मुक़द्दस क़ानून की पाबन्दी और उस पर अमल करने में बड़ी कोताही हो रही है, हम इस क़ानून को अपने घरों में तोड़ रहे हैं, अल्लाह तआला कहीं हमें इसकी सज़ा न दे कि वह क़ानून फिर क़ानूनी तौर पर तोड़ा जाये, यह ख़ुदा के तरीक़े होते हैं वह कभी प्रत्यक्ष रूप में सज़ा देता है, कभी मख़लूक़ात सृष्टि और अपने बन्दों द्वारा सज़ा दिलवाता है, इसलिए पहले हम क़ानून शरीअत की हुरमत मर्यादा और उसका सम्मान अपने घरों में करें, मियाँ बीवी अपने सम्बन्ध और हुक़ूक़ व फ़राएज़ में करें जो उन पर लागू होते हैं, तरका व मीरास (मृतक सम्पत्ति) के क़ानून में उसका सम्मान करें, इसकी पाबन्दी करें, निकाह व तलाक़ के मसाएल में उस पर अमल करें।

यह सही है कि ग़ैर मुस्लिम समाज में समाजी व अख़लाक़ी बुराईयों की ज़ियादती है, दुल्हनों के जलाने के 99 प्रतिशत वाक़िआत उस समाज में होते हैं, लेकिन एक ''ख़ैर उम्मत'' और महासिने इन्सानियत नबी करीम सल्ल0 के पैरोकार होने का तक़ाज़ा यह है कि हमको अल्लाह तआला ने जिस आदर्श इस्लामी समाज से नवाज़ा है, हम अमली तौर पर ग़ैर मुस्लिम भाईयों के सामने इसका नमूना पेश करें, इसके बिना हम इस मुल्क और समाज पर प्रभावकारी नहीं हो सकते, विभिन्न कारणों की बिना पर इस समय हालात ऐसे हैं कि अगर हमने सिर्फ़ यही कर लिया कि अपनी समाजी बुराईयाँ दूर करके उसको आदर्श समाज बना दिया तो यह बात ग़ैर मुस्लिमों को प्रभावित करने के लिए काफ़ी है और यही हिन्दुस्तानी मुसलमानों के मुश्किलात व मसाएल के हल की सबसे बड़ी कुन्जी है।

आप मुस्लिम समाज के जिस वर्ग से सम्बन्धित हों आप हिन्दुस्तानी समाज के निर्माण और उसकी रचना में महत्वपूर्ण बुन्यादी किरदार अदा कर सकते हैं। आप हिन्दुस्तान ही नहीं पूरी इन्सानियत की चारासाज़ी में सहायता कर सकते हैं।

❖❖❖

कोशिश किये जाओ

—मौलवी इस्माईल मेरठी

दुकां बन्द करके रहा बैठ जो — तो दी उसने बिल्कुल ही लुटया डुबो
न भागो कभी छोड़ कर काम को — तवक़्को[1] तो है, ख़ैर जो हो सो हो
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

जो पत्थर पे पानी पड़े मुत्तसिल[2] — तो घिस जाये बेशुबहा पत्थर की सिल
रहोगे अगर तुम यूँही मुसतक़िल[3] — तो एक दिन नतीजा भी जायेगा मिल
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

अगर ताक़ में तुमने रखदी किताब — तो क्या दोगे कल इम्तिहाँ में जवाब
न पढ़ने से बेहतर है पढ़ना जनाब — कि हो जाओगे एक दिन कामयाब
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

न तुम हिचकिचाओ न हरगिज़ डरो — जहाँ तक बने काम पूरा करो
मशक़्क़त उठाओ मुसीबत भरो — तलब में जियो जुस्तुजू[4] में मरो
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

जो तुम शेरे दिल हो तो मारो शिकार — कि ख़ाली न जायेगा मर्दों का वार
मशक़्क़त में बाक़ी न रखना उधार — जो हिम्मत करोगे तो बेड़ा है पार
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

जो बाज़ी में सबक़त[5] न ले जाओ तुम — ख़बरदार हरगिज़ न घबराओ तुम
न ठिटको न झिझको न पछताओ तुम — ज़रा सब्र को काम फ़रमाओ तुम
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

मुक़ाबिल[6] में ख़म ठोक कर[7] आओ हां — पछड़ने से डरते नहीं पहलवाँ
करो पास तुम सब्र का इम्तिहाँ — न जायेगी मेहनत कभी राएगाँ
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

तरद्दुद[8] को आने न दो अपने पास — है बेहूदा ख़ौफ़ और बेजा हिरास[9]
रखो दिल को मज़बूत, क़ायम हवास — कभी कामयाबी की छोड़ो न आस
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

करो शौक़ व हिम्मत का झण्डा बलन्द — कुदाओ उलुल—अज़मियों[10] का समन्द
अगर सब्र से तुम सहोगे गज़न्द[11] — तो कहलाओगे एक दिन फ़तेह मन्द[12]
किये जाओ कोशिश! मेरे दोस्तो!

नोटः—(1) तवक़्क़ो=उम्मीद (2) मुत्तसिल=बराबर (3) मुस्तक़िल=स्थायी (4) जुस्तुजू=खोज (5) सबक़त=पहल (6) मुकाबिल=सामने (7) ख़म ठोकना=ताल ठोकना (8) तरद्दुद=संकोच (9) हिरास=भय (10) उलुल—अज़मिमों=साहसी पक्के इरादे वाला (11) गज़न्द=कष्ट (12) फ़तेहमन्द= विजयी

आह! प्यारे दादा जान

(डॉ० हाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीक़ी पुत्र मुहम्मद इस्हाक़)

(1933–2021 ई0)

–अब्दुलकरीम सिद्दीक़ी नदवी

दादा जान भी अब न रहे, और हम सब को छोड़ कर इस दुन्या से चले गये, इन्नालिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन, गोया शफक़त व महब्बत का आसमान सर से उठ गया, यह मेरी खुशनसीबी है कि दादा जान के पास रहने और उनसे कुछ हासिल करने का जो मौक़ा मुझे मिला वह किसी और को न मिल सका और उनकी शफ़्क़तों व चाहतों की बारिश से जितना मैं सैराब हुआ वैसा कोई और न हो सका, उसकी वजह यह थी कि दादा ने मुझे बचपन से हमेशा अपने साथ ही रखा और हर तरह का प्यार दिया, वह एक पल के लिए भी न मुझ से अलग हो पाते थे और न मैं उनसे, इसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि सन् 2009 ई0 में मुलाज़िमत के लिए मैं सऊदी अरब गया, उन्होंने दिल पर पत्थर रख कर मुझे भेज तो दिया, मगर एक दिन छोड़ कर फोन करके बराबर मेरी ख़ैरियत पूछते रहते थे, मुझे अपनी तबीयत के बारे में कभी न बताया और सब को मना भी कर रखा था, मगर वहां मुलाज़िमत में मैं ज़ियादा कामयाब न हो सका तो जब मैंने दादा जान को इसके बारे में बताया तो फौरन कहा कि ख़र्च की फिक्र न करो और चले आओ, और यहां आ कर मुझे पता चला कि दादा जान की तबियत इतनी ख़राब हो गई थी कि उन्हों ने बिस्तर पकड़ लिया, और डॉक्टर को घर पर बुलाना पड़ा, और जिस दिन से मेरी वापसी की ख़बर मिली है धीरे धीरे उठ खड़े हुए और चलने फिरने लगे, मुझे पढ़ाया लिखाया और उसके बाद भी आख़री साँस तक साथ रखा मगर जिस तरह उनकी खिदमत करनी चाहिए मैं न कर सका, अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमाए और उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए और उनके दरजात को बलन्द फ़रमाए, आमीन।

इधर कुछ सालों से बहुत कमज़ोर हो गए थे, अकेले चलना फिरना मुशकिल हो गया था, मगर नवम्बर 2019 ई0 से तो इतना बीमार हो गए कि दोबारा बिस्तर से न उठ सके, तमाम ज़रूरतें बिस्तर पर ही पूरी होती थीं, इस हालत में भी वह हमेशा सब की ख़बर रखते थे और ख़ैरियत मालूम करते रहते थे।

दादा जान का जन्म बाराबंकी के रुदौली क़स्बा के क़रीब छोटे से एक गाँव पूरा रज़ा खाँ में हुआ, पहले जन्म तिथि कहीं लिखी तो जाती नहीं थी इस लिए उनके पिता ने जब उनका नाम स्कूल में लिखवाया तो उस समय 11 अगस्त 1933 ई0 लिखवाया, दादा जान ने ऐसे माहौल में जन्म लिया और पले बढे जो बिद्अ़त व रुसूमात से बहुत घिरा हुआ था। घर में खुद ताज़ियादारी व मीलादख्वानी का रवाज़ था, चन्द लोग जिसमें उनके पिता जी भी थे ताज़ियादारी को ग़लत समझते थे मगर खानदान के लोग क्या कहेंगे यह सोच कर उसे नहीं छोड़ते थे, ऐसे माहौल में दादा ने उसकी तह़क़ीक़ की और खानदान में सब से पहले इसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई, और अपने पिता जी की वफ़ात के बाद घर की औरतों को सबसे पहले दावत दी और धीरे धीरे सबको सही रास्ता दिखाया जिससे धीरे धीरे काफी लोग सही रास्ते पर आ गए।

अपनी आप बीती में दादा

जान ने उस समय के माहौल का तज़किरह किया है किः

''वालिद मीलादख्वाँ थे मीलाद की किताब बहुत ग़लत पढ़ते थे, मेरी उर्दू, और फार्सी दोनों अच्छी थी इसलिए गाँव में मीलाद ख़्वानी भी मेरे ज़िम्मे हुई और त्योहारों में घर घर फ़ातिहा ख़्वानी भी, वालिद साहब यह सारे काम अल्लाह वास्ते करते थे, किसी के यहां दावत भी न खाते थे मैंने भी वही मामूल अपनाया, अलबत्ता मीलाद ख्वानी पर दो एक लोग मुझे दावत खिला देते थे, फिर साल में चार पाँच मीलादों से ज़ियादा गाँव में मीलाद भी न होतीं ताज़ियादारी मेरे घर में भी होती और खानदान में भी, एक मुहर्रम से मुहर्रमी बाजे बजते, सात मुहर्रम को अलम चढ़ते और आसपास के गाँव में अलम घुमाये जाते, कई कई गाँव के अलम एक साथ जुलूस की शक्ल में जाते, जिस गाँव में अलम पहुँचते मुहर्रमी बाजों के साथ दाख़िल होते गाँव वाले अपने अलम और बाजों के साथ इस्तिक़बाल करते, फिर ख़ूब बाजे बजते, बाज़ लोग अपने लाठी–डण्डों के करतब भी दिखाते, हर गाँव वाले आने वालों को शर्बत पेश करते, नौ मुहर्रम तक यह सिलसिला जारी रहता, नौ की शाम को हर गाँव में चबूतरों पर ताज़िया रखे जाते, रात भर उनकी ज़ियारत होती, खूब बाजे बजते, मरसिये पढ़े जाते, चाय शरबत के दौर चलते, शहादत नामे पढ़े जाते , ताज़ियों पर खूब चढ़ावे चढ़ते और सुब्ह को दिन चढ़े अलम और बाजों के जुलूस के साथ दफ़न के लिए ले जाते और कर्बला में दफ़न करते, कर्बला उस जगह को कहते हैं जहां ताज़िये दफ़न किये जाते हैं, हर गाँव में एक कर्बला का होना अब तक चला आ रहा है, ताज़ियादारी की उन तमाम रसमों में मेरा नुमाया हिस्सा रहता था, उस वक़्त न पायकों की कसरत थी न अस्र बाद ताज़ियों के दफ़न का रवाज़ था।

आगे लिखते हैंः– एक रोज़ हमजोलियों में गाँव के हालत पर चर्चा हो रही थी कि मेरी ज़बान से निकला हमारे गाँव के मुसलमान, मुसलमान नहीं काफ़िर हैं, मुहर्रमी बाजों का भी ठीक से इंतिजाम नहीं करते। अस्ल में मुहर्रमी बाजों में उस वक़्त खानदान की ओर से एक बड़ा ढोल था, एक जोड़ा झाँझ थी जिस में एक टूटी हुई थी और ताशा मेरी ओर से था, खानदान में उस वक़्त सबसे बुजुर्ग मेरे पिता के चाचा (उनके दादा के भाई के लड़के) जनाब रौनक़ अली साहब थे, जिनको पूरा खानदान बल्कि पूरा गाँव ''बड़े बाबा'' कहता था, उन्होंने मेरा जुमला ''हमारे गाँव के मुसलमान, मुसलमान नहीं काफिर हैं'' सुन लिया था, बड़ी नाराज़गी का इज़हार किया, मेरे पिता जी से कहा, काफ़िर तो काफ़िर को भी न कहना चाहिए, क्या मालूम वह ईमान ले आये, इसने हम लोगों को काफ़िर कह दिया, मुझे बड़ी खिफ़्फत व नदामत हुई, मैंने मुआ़फी तलाफी की, लेकिन यहीं से मेरी ज़िन्दगी का रुख़ मुड़ गया, अब तक सरकारी स्कूल के कुछ शिक्षकों की वजह से दीनी कामों की ओर कोशिश करता था लेकिन अब सही दीन जानने का शौक पैदा हुआ''।

दादा की दावती व इस्लाही कोशिशों से इलाक़े के माहौल में काफ़ी तब्दीली हुई और न सिर्फ यह कि घर बल्कि इलाक़े के लोगों की भी शिक्षा तथा इस्लाह बड़ी फिक्रमन्दी के साथ की, उनको शिक्षित बनाया, तौहीद के बारे में बतलाया, बिदआत व ख़ुराफ़ात से दिलों में नफ़रत बिठाई उनकी चिन्ता ही की वजह से आज उनकी संतान में खुदा के फ़ज़्ल से अनेक हाफ़िज़ व आलिम हैं।

दादा की प्रारंभिक शिक्षा करीब के ही एक गाँव ''पुरायें'' के ''प्री–प्रेट्री स्कूल'' से शुरु हुई, फिर कक्षा दो के बाद तक़रीबन

1943 ई0 में क़सबा रुदौली के ''नोटीफाइडेरिया स्कूल'' जाना हुआ और फिर कक्षा चार पास करके मिडिल स्कूल में नाम लिखा गया और मार्च 1948 ई0 में मिडिल पास किया, पढ़ाई में हमेशा प्रथम श्रेणी से पास हुऐ।

उसके बाद से दादा जान के पिता जी ने कुछ घरेलू कार्य की वजह से शैक्षिक श्रृंखला जारी न रहने दिया, और खेती के काम में लगा दिया। मेहनत से वह कभी पीछे नहीं हटे, मशहूर हो गया था कि वह दो आदमियों का काम अकेले कर लेते हैं, 1950 ई0 से उनके पिता जी ने भी खेती छोड़ दी और पूरा काम अकेले दादा जान संभालने लगे और 1951 ई0 में उनके पिता जी का भी देहान्त हो गया।

एक लम्बे अंतराल के बाद मदरसा ''अबू अहमदिया'' (मण्डा टाँड़, गुलचप्पा कलाँ, अलियाबाद, बाराबंकी) में शैक्षणिक सेवाएं शुरु कीं, और साथ–साथ हिफ़्ज़ भी किया, वहीं से 11 मार्च 1962 ई0 में हिफ़्ज़ का प्रमाणपत्र प्राप्त किया, उसके बाद मौलाना अब्दुश्शकूर फारूक़ी साहब रह0 मौलाना सानी हसनी साहब रह0, मौलाना अली मियां साहब रह0 से संबंध हुआ और लखनऊ आ गये, फिर लखनऊ में अमीरुद्दौला इस्लामिया इण्टर कॉलेज लालबाग, लखनऊ से 1968 ई0 में हाई स्कूल पास किया, और विद्यांत हिन्दू इण्टर कॉलेज लाटूश रोड, लखनऊ से 1970 ई0 में इण्टर पास किया, और लखनऊ यूनिवर्सिटी से 1974 ई0 में बी0ए0 पास किया और 1976 ई0 में एम0ए0 पास किया और फिर 1981 ई0 में ''हक़ीम सय्यद फख़रुद्दीन ख़्याली हयात व कारनामे और उनकी रेखता गोयाने हिन्द की तंक़ीदी तदवीन'' के विषय पर पी0एच0डी0 की डिग्री प्राप्त की, फिर ''जामियतुल मलिक सऊद रियाज़'' में पढ़ने का मौक़ा मिला तो अरबी से अज्ञात होने की वजह से पहले ''मअ़हदुल लुग़ा'' में प्रवेश लिया और 15 जून 1980 ई0 में पास किया और ''माजिस्तर'' (एम0ए0) से 25 मई 1985 ई0 में प्रमाणपत्र प्राप्त किया, और फिर नदवा चले आये।

दादा जान का मिज़ाज तह़क़ीकी था कोई भी बात बिला तहक़ीक़ के न करते मालूम होने के बाद भी बारबार शब्दकोश या किताब से सम्पर्क करते, हम लोग कभी कभी कहते कि इतना आसान शब्द उसको क्या शब्दकोश में देखेंगे तो कहते देखो, फिर से तह़क़ीक़ कर लेने से इतमीनान हो जाता है, इस तरह हम लोगों को भी मालूम हो जाता, मुमकिन है हमारी तरबियत के लिए इसका एहतिमाम करते रहे हों।

अश्आ़र ख़ूब कहा करते थे, जब तक खुद लिख सके लिखते रहे, रात या दिन के किसी लम्हे में भी कोई शेअ़र मन में आता उसे लिख लेते, और जब मजबूर हो गये तो हम लोगों में से किसी के आने का इंतिज़ार करते और कोई सामने आता तो फौरन लिखवाते और फिर उसमें कई कई बार सुधार करवाते, इधर कई साल से निगाह की कमज़ोरी के बावजूद गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस पर अश्आ़र कहते और खुद उसको मंच पर जा कर पढ़ते।

जिक्र और अज़कार का बहुत एहतिमाम करते थे, हमने उनको तहज्जुद और इशराक़ का पाबन्द हमेशा पाया, नमाज़ की ताकीद करते थे और फज्र में पाबन्दी से हम सबको उठाते थे।

दीन की दावत का काम बहुत शौक़ से करते थे, जुमे के दिन छुट्टी रहती है लेकिन दावत की धुन व लगन की वजह से मुसलसल तीन साल तक हर जुमा को लखनऊ के आस पास के इलाक़े में कुछ असातिजा व तलबा को साथ ले कर निकल जाते ताकि मुसलमानों को क़ादियानियों से बचाया जा सके और उनको अक़ीद–ए–तौहीद

पर क़ाइम रखा जा सके। एक रूट तै करके निकलते और एक एक उस्ताद को तकरीर के लिए एक एक मस्जिद में छोड़ते जाते थे, खाना घर से अपने साथ ले कर जाते थे, वापसी में आखरी मस्जिद में सब इकट्ठा हो कर खाना खाते, फिर नदवा वापस आजाते।

मअ़हद दारुल उलूम नदवतुल उलमा में पहले टीचर फिर प्रधानाध्यापक हुए और वहां के इंतिजाम को खूब अच्छी तरह संभाला, उनके प्रबन्धन के समय में मअ़हद का तालीमी निज़ाम बहुत अच्छा तथा सराहनीय था जिसकी गवाही उस समय के छात्र खुद देते हैं, मअ़हद की वजह से पहले शहर के बहुत बच्चे नदवे में पढ़ने आते थे छात्रों ने उस तालीमी निज़ाम से खूब फ़ायदा उठाया, मअ़हद की शिक्षा के बाद वह यहां से निकल कर किसी भी स्कूल में शिक्षा ले सकते थे, हिन्दी, उर्दू, गणित, विज्ञान, भूगोल वग़ैरह सब पढ़ाया जाता था, छात्रों के हित में हमेशा नर्म रहते थे कभी भी छात्रों को प्रधानाध्यापक की ज़रूरत होती तो फौरन हाज़िर होते और उनकी समस्या का समाधान करते। वक़्त की पाबन्दी का उनको बड़ा ख्याल था कभी भी एक मिनट विलम्ब होना उनको पसन्द न था, मअ़हद में रहे तो वहां भी समय का ख़्याल रखा उसके बाद सिकरौरी गए तो वहां भी और जिस जिस विभाग में रहे समय की पाबन्दी हमेशा रखी, आखिरी समय में जब बहुत कमज़ोर हो गये तो भी समय पर दफ़्तर सबसे पहले पहुंच जाते थे कभी कभी सर्दियों में दफ़्तर उनके पहुंचने के बाद खुलता था, मौलाना हमजा साहब मरहूम ने कई बार दादा जान से कहा कि आप थोड़ा देर से दफ़्तर आया करें आप माज़ूर हैं और सिस्टम शेडयूल की पाबन्दी आप के लिए नहीं है तो कहते समय की पाबन्दी सब के लिए है और समय पर ही दफ़्तर आते थे।

हज़रत मौलाना अली मियाँ रहमतुल्लाहि अलैह और उनके परिवार से बड़ी आस्था और प्रेम रखते थे कोई भी ज़िम्मेदारी दी गयी हमेशा ईमानदारी से उसे निभाया, नदवा और नदवा के सदस्यों से बहुत महब्बत करते थे और उनका ऐहतराम करते थे।

दादा जान ने अनेक किताबें लिखी हैं वह निम्न प्रकार हैं:–

1. ''हक़ीम सय्यद फख़रुद्दीन ख़्याली'' हयात व कारनामे और उनकी रेखता गोयाने हिन्द की तनक़ीदी तदवीन। (यह डॉ0 साहब के पी0एच0डी0 शोध प्रबन्ध का शीर्षक था जो बाद में किताबी शक्ल में प्रकाशित हुआ।
2. सहीफतुल मदीना रिआसतुन हदीसीयतुन व तह़क़ीक़ (अरबी), एम0ए0 का मकाला है।
3. जिन्नात का बयान।
4. फितन–ए–क़ादयानीयत
5. माहे मुह़र्रम और ताज़ियादारी
6. नमाज़ की किताब (उर्दू, हिन्दी)।
7. इस्लामी निकाह (उर्दू, हिन्दी)
8. मय्यत के हुकूक़
9. आसान तरीन ह़ज
10. सानह–ए–करबला
11. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर
12. अपने भाईयों से इत्तिहाद व इत्तिफाक़ की अपील, वगैरह।

दादा जान की हयात में ही इन तमाम इल्मी लेखों का एक एडीशन आ चुका है, और मक़बूल भी हुआ, जिसकी वजह से सब किताबों का पहला एडीशन खत्म हो चुका है, दूसरे एडीशन का इरादा है, अल्लाह तआ़ला तौफीक़ अ़ता फरमाये। अल्लाह तआ़ला उनकी इल्मी, दअ़वती, तालीमी, तदरीसी ख़िदमात को कुबूल फरमाये और जन्नतुल फिरदौस में मक़ाम अ़ता फरमाये। आमीन!

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

ऐकता का संदेष्टा

–अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0–
अनुवादकः इं0 जावेद इक़बाल

(रसूले वेहदत)

सारे इन्सान एक समानः–

''एकं ब्रह्म'' का संदेश तभी पूर्ण होगा जब ईश्वर को वास्तव में सर्वश्रेष्ठ माना जायेगा। व्यभिचारी, मूर्ति पूजक नक्षत्रों के उपासक, पत्थर वृक्ष और पशुओं को देवता बना देने वाले, भूत प्रेतों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करने वाले, देवताओं को पालनहार और अपने ही जैसे कुछ इन्सानों को भगवान बना लेने वाले वस्तुतः यह घोषणा करते हैं कि उन्होंने इन्सान के स्थान को नहीं समझा। इन्सान को पशुओं, वृक्षों, पत्थरों और पर्वतों, चाँद और सितारों आदि से निम्न कोटि को समझने वालों का मत है कि सूर्य और चन्द्रमा मानव सेवा के लिए नहीं बल्कि स्वयं मानव सूर्य और चन्द्रमा की उपासना के लिए हैं। और यह विचार धारा इतनी व्यापक हो गई कि सृष्टि की प्रत्येक रचना, सूर्य से लेकर धरती पर रेंगने वाले कीड़े मकोड़े तक इन्सान के द्वारा खुदा और उपास्य बना लिए गये। और यह इन्सान रूपी सर्वोत्तम प्राणी अपने ही सेवकों का दास बन गया। और इस का प्रभाव अगले चरण में यह हुआ कि मानव जाति स्वयं भी अनेक ऊँच नीच की श्रेणियों में खंण्डित हो गई। कोई वर्ग ईश्वर के मुख से तो कोई पैर से रचा हुआ मान लिया गया, समान स्तर और समान अधिकारों वाले मानव की विचार धारा ही गुम हो गई। इन्सान ही इन्सान का देवता और पालनहार बन गया।

मानव के सर्वोत्तम प्राणी होने की घोषणाः–

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने अन्तिम ईश दूत का पद ग्रहण करने के उपरान्त ईश्वर के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु का भय मानव के मन से निकाल दिया। दुन्या के समस्त वर्गों को ऊँच नीच की प्रथा से मुक्त कर दिया। सम्प्रदायों एवं जातियों की एक दूसरे पर संप्रभुत्ता समाप्त कर दी। समस्त मानव एक परमेश्वर के दास और सब उसके समक्ष समान, सब आपस में भाई–भाई और सबके अधिकार एक समान घोषित कर दिये गये। आप सल्ल0 ने जगत वासियों को शिक्षा दी कि धरती, आकाश, जीव, जन्तु, जल, वायु, अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा और सितारे प्रत्येक वस्तु की रचना मानव जाति की सेवा के लिए की गई है और प्रत्येक अपने कार्य पर डटा हुआ है। ऐसी स्थिति में उस इन्सान से बड़ा नादान कौन होगा जो अपने सेवकों को ही अपना देवता बना ले।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की शिक्षा, उन पर अवतरित होने वाली ईशवाणी पर आधारित थी। जिसके प्रकाश में उन्होंने यह आदर्श पाठ पढ़ाया कि हे, जगत वासियों इन्सान सृष्टि की समस्त रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ रचना है। उसको धरती पर ईश्वर ने अपना उत्तराधिकारी बनाया है। उसका मस्तक ईश्वर के निजज्ञान एवं ''सत्ता धारक'' रूपी मुकुट से शोभायमान है। ईश्वर की असंख्य रचनाओं में इन्सान ही वह एक मात्र रचना

है जिसे इस भार को ग्रहण करने की योग्यता दी गई। यह पद न देवताओं को मिला न देवियों को, न सूर्य को न चन्द्रमा को, न धरती को न आकाश को, किसी को नहीं मिला।

पवित्र कुर्आन अवगत कराता है कि मनुष्य अति उत्तम गुणों का धारक, सृष्टि की रचनाओं में सर्वोत्तम और अनेकानेक दक्षताओं का पात्र है। उसमें जल और थल आकाश और वायुमण्डल पर सत्ता स्थापित करने की शक्ति है। उसका शरीर सुन्दर और विभिन्न क्षमताओं एवं कुशलताओं का संगठन है। वह धरती पर सृष्टि के रचयिता का उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ है, तो फिर वह अपने सृष्टा के अतिरिक्त किस के समक्ष साष्टांग (सजदा) करे।

वस्तुतः आप सल्ल0 की शिक्षा ने इन्सान के मस्तक को हर चौखट से उठा कर केवल एक ईश्वर की चौखट पर झुका दिया और बता दिया कि समस्त रचनायें इन्सान की सेवा में व्यस्त हैं, तू अब किसके समक्ष अपने को झुकाता है। संसार ने मानवता के इस सर्वोच्च स्तर को पहचानने के बाद इस उत्तम विचार धारा के अधीन जो उत्तरदायित्व निभाया और विश्व को आधुनिक काल की अनेकानेक हितकारी विभूतियों से लाभान्वित किया, यह पवित्र ईश्वाणी कुरआन की शिक्षा का ही पुरस्कार है। इस शिक्षा ने ही इन्सान को उसके अभिमान का वास्तविक परिचय दिया जिसके कारण उसे अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण रूप से निभाने की प्रेरणा मिली। सम्पूर्ण विश्व के इन्सानों को एक समान स्तर प्रदान करके एकता के सुखद स्वाद से अवगत कराया यही विश्वास था जिसे पा कर ऊँट और बकरी चराने वाले इन्सान मुल्कों के मार्गदर्शक बन गये थे।

वर्ण व्यवस्था एवं ऊँच नीच का भ्रमः—

मनुष्यों ने झूठे अभिमान एवं गर्व के फलस्वरूप मानव समूह को अनेक भागों मे विभक्त कर रखा था। सम्राट को ईश्वर की श्रेणी में सम्मिलित कर दिया गया था। और उसके समक्ष सजदा किया जाता था। सम्राट के आदेश ईश्वर के आदेश समान थे। बाबुल के नमरूद, मिस्र के फ़िरऔन, भारत के हरिणाकष्यप स्वयं को मानवता का पालनहार एवं पूजनीय घोषित करते थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की आवाज़ थी जिसने इन मानवीय सम्राटों को उनके पाखण्डी ईश्वरीय मंच से उतार कर साधारण जनता के मध्य समान स्तर पर ला बिठाया और ईश्वर के अतिरिक्त किसी को राजा या सम्राट कहना भी स्वीकार नहीं किया।

इसी प्रकार धर्म के पाखण्डी रक्षकों ने संदेशवाहक ऋषियों, मुनियों आदि को भी ईश्वर के समान सर्वोच्च स्तर प्रदान कर दिया था। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने प्रत्येक को उसके उचित स्थान पर समान स्तरी ईश्वर का बन्दा एवं दास घोषित किया। अनेक सम्प्रदायों ने भी स्वयं को उच्च श्रेणियों एवं वर्गों में वर्गीकृत कर रखा था। इस्राईल वंशी स्वयं को ईश्वर का परिवार मानते थे। हिन्दुओं में ब्राह्मण ईश्वर के मुख से, राजपूत उसकी भुजाओं से, शूद्र उसके पैरों से उत्पन्न माने जाते थे। रोम देश में रोमन वंश शासन करने एवं शेष सभी सेवा

करने के लिए समझे जाते थे। इस प्रकार सभी सम्प्रदायों में ऊँच नीच की दीवारें खड़ी थीं, जिन्होंने मानवता को अनेक वर्गों में खण्डित कर दिया था। परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के संदेश ने इन सभी को इस प्रकार सम्बोधित किया ''तुम सब ईश्वर की अन्य सभी सृष्टियों की भांति, रचनानुसार एक मानव मात्र हो''। इस प्रकार समस्त श्रेणियों को समाप्त करके सारे इन्सानों को एक स्तर पर ला खड़ा किया।

ईश्वाणी कुरआन ने कहा ''ऐ लोगो हमने तुमको परिवार और गुटों में इसलिए बांटा है कि तुम आपस में एक दूसरे की पहचान कर सको, निःसन्देह ईश्वर के प्रति सर्वप्रिय वह है जो सर्वाधिक साधना में लीन एवं उसका आज्ञाकारी हो।''

अभिमानी अरब वासियों को सम्बोधित करते हुए आप सल्ल0 ने इन शब्दों में सावधान किया था– ''ईश्वर ने अज्ञानता के कारण उत्पन्न होने वाले घमण्ड तथा वंश एवं देश पर आधारित अभिमान को मिथ्या घोषित कर दिया है, तुम सब एक पिता आदम की संतान हो और आदम को मिट्टी से बनाया गया था।'' इसी प्रकार यह भी घोषणा कर दी कि किसी भी अरब वासी को अन्य गैर अरब वासी पर, गोरे को काले पर या काले को गोरे पर किसी प्रकार का अभिमान उचित नहीं। स्पष्ट हो गया कि साधना उपासना एवं आज्ञापालन के अतिरिक्त अन्य सभी गर्व मिथ्या झूठे हैं और सारे इन्सान आपस में भाई भाई घोषित कर दिये गये हैं और बता दिया कि ''एक दूसरे के प्रति द्वेष न करो, किसी से धोखा न करो और ऐ अल्लाह के बन्दो आपस में भाई–भाई बन कर रहो।''

अनेक भूलों में से एक भूल यह भी थी कि लोग धर्म एवं कर्म को अलग–अलग समझते थे जो धर्म मार्ग चुनता था वह दुन्या के अन्य कार्यों से अलग हो जाता था, और जो दुन्या प्राप्त करने का इच्छुक होता था वह धर्म से कट जाता था।

संसार के प्रत्येक भाग में इस विचारधारा ने ऐसा व्यापक रूप धारण कर लिया था कि ऋषियों और मुनियों तथा राज दरबार के शासकों के मध्य एक बड़ी खाई बन गई थी और दोनों गुटों में समन्वय असम्भव हो गया था। जिस का परिणाम यह हुआ कि कुछ लोग केवल ईश्वर की साधना में लग गये संसार के कार्यों को त्याग दिया और कुछ ने दुन्या की प्राप्ति के लिए धर्म का मार्ग भुला दिया। जिसका नतीजा यह हुआ कि भारत में ब्राहम्ण धर्म के लिए, राजपूत सत्ता के लिए, वैश्य व्यापार और खेती के लिए करार पाये और शूद्र, समाज सेवा के लिए विवश कर दिये गये। यहूदियों में ''लादी'' धर्म के लिए समर्पित थे उन्हें दुन्या की सम्पत्ति से भी वंचित कर दिया गया था। जब कि अन्य सभी लोग केवल दुन्या के कार्यो में व्यस्त रहते थे। ईसाईयों ने तो इस भेदभाव को और अधिक व्यापक कर दिया, उन्होंने अपने दो शासक बना लिए उनके अनुसार ईश्वर की सत्ता अलग है और सम्राट की अलग। उनके यहां दोनों के अलग अलग अधिकार क्षेत्र स्थापित कर दिये गये हैं।

.....जारी.....

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021 तारीख

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्डिंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।
नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/— (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखेंः
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजेंः
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
–ःतअ़मीरः–
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू के जुमले पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी जुमले से मदद लीजिए

صبح کو ہم سب کھائیں ناشتہ
پسند کی اپنی کھائیں ناشتہ
ہے بہتر ہو انڈا روٹی
چائے ہو اچھی ایک پیالی
ہوئی دوپہر لو سبزی روٹی
چاول ہو اور دال ہو کیوٹی
شام کو ہو تو گوشت پکائیں
ورنہ سبزی روٹی کھائیں
کھانا انساں اتنا کھائے
معدے میں وہ ہضم ہو جائے

सुबह को हम सब खाएं नाशता
पसन्द का अपनी खाएं नाशता
है बेहतर हो अण्डा रोटी
चाय हो अच्छी एक प्याली
हुई दोपहर लो सब्ज़ी रोटी
चावल हों और दाल हो केवटी
शाम को हो तो गोश्त पकाएं
वरना सब्ज़ी रोटी खाएं
खाना इन्सां इतना खाये
मेदे में वह हज़्म हो जाये

RNI No. UPHIN/2002/0795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 20 - Issue 12

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983